यह देखकर मेहरुन्निसा का दिल टूट गया, इसके बाद भी उसने कई प्रयत्न किये, कई सन्देश भिजवा पर उस युवक का दिल पसीजा ही नहीं।

उन्हीं दिनों यास्मीन नाम की एक बुढ़िया मेहरुन्निसा के सम्पर्क में आई तो नूर ने सारी बात यास्मीन को बाद उस युवक ने प्रेम की जो मिसाल कायम की वह इतिहास में सोने के अक्षरों में लिखी गई इबारत है।

नबी ने जो प्रयोग किया था, वह गोपनीय रहा है, परन्तु पत्रिका पाठकों को उस गोपनीय प्रयोग का उद्घाटन पहली बार इन पन्नों पर कर रहा हूँ—

और इस मन्त्र से जुए में जीता जा सकता है

किसी भी शुक्रवार के दिन शाम को नीचे काला आसन बिछा कर काली धोती पहन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने २१ हकीक के दाने रख दे, फिर मूंगे की माला से २१ माला मन्त्र जप करे।

मन्त्र जप के बाद उन हकीक पत्थरों को पोटली में बांध जेब में रख कर जुआ खेलने जावे तो वह बराबर जीतता रहता है।

मन्त्र

कखे रखता दमरू पाक वाय जिन नेदनो दाणीय तेब लोखणी पातरु फट्।

यह आजमाया हुआ प्रयोग है, और इसके माध्यम से निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है।

रविवार को प्रातः सूर्योदय के समय स्नान करके सफेद धोती पहन कर दक्षिण दिशा की ओर दिशाओं में तेल के दीपक लगा ले तथा हकीक माला से निम्न मन्त्र की ग्यारह मालाएं फेरे ।

वह मन्त्र : जिससे भूत वश में किया जा सकता है

भूत भी सामान्य मनुष्य की तरह ही होते हैं, यह अलग बात है, कि वे योनि में होते है, परन्तु मनुष्य से ज्यादा वे विश्वासपात्र सिद्ध हुए हैं, नीचे मैं वह गोपनीय मन्त्र दे रहा हूं, जिसे सिद्ध करने पर भूत वश में रहता है, और उससे आप मन चाहा काम चौबीसों घण्टे करवा सकते हैं ।

रविवार को प्रातः काली धोती पहिन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, नीचे काला आसन हो, फिर सामने पांच सूअर के दांत रख दे, पांचों के सामने पांच-पांच कालीं मिर्च रखे फिर हकीक माला से निम्न मन्त्र से सवा लाख मन्त्र जप सात दिनों में पूरा करे, जब मन्त्र जप पूरा होगा तो आवाज आयेगी कि मैं अमुक तुम्हारे वश में हूं, और आप जो भी आज्ञा देंगे बजाऊंगा, तब जिधर से आवाज आये उस तरफ वे पांचों सूअर के दांत तथा काली मिर्च उछाले, ऐसा करने पर भूत जीवन भर वश में रहता है ।

मन्त्र

ॐ छपर केपर प्रहलान लावे पाताल बांधे पिण्ड प्राण को बेधे भूत हाजर हो कार्य करे न करे तो नरसिंह को आण सबद साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

मन्त्र

सवा मनका भावना लोहे की जंजीर हाथी आवे झूमता कमाल खां असवार खडे बोलो अर्ज करे गुर्ज पटके हौज हुई जाय अब की कवना मेरो करो, भंग का प्याला जाय पियो हिन्दू की राम कहे मुसलमान की कलमा मुहम्मद नाम पढ़े सत्तर काम तेरे, एक काम मेरा करके न बताये तो कसम है ।

यह मन्त्र दिखने में भले ही सीधा सादा हो पर इसका जितनी बार भी प्रयोग किया गया उतनी ही बार आश्चर्यजनक परिणाम दिखाये, ग्यारह माला मन्त्र जप करने के बाद वह हत्था जोड़ी किसी चांदी या ताम्बे की डिब्बी में बन्द करके अपनी जेब में रख ले और उसके ऊपर जो सात काली मिर्च और लौंग रखे हुए थे, उसे चबाकर पानी के साथ निगल जाय ।

छत्तीस कोष्टकों में जो खाद्य सामग्री रखी हुई थी, वह किसी एक कटोरी में इकट्ठी कर ले और उसमें से थोड़ा सा प्रसाद किसी भी युक्ति से जिसे वश करना हो, उसे खिला दें तो वह तुरन्त वश में हो जाता है, तथा जीवन भर विश्वास पात्र बना रहता है, बाकी का खाद्य पदार्थ भी किसी डिब्बी में बन्द करके रख देना चाहिए और जब-जब भी उसके व्यवहार में कुछ कमी अनुभव हो तब तब वह पदार्थ किसी युक्ति से उसे खिला दे तो वह पुनः नियन्त्रण में बना रहता है ।

यह प्रयोग पुरुष द्वारा किसी भी अन्य पुरुष या अधिकारी पर, शत्रु पर, या किसी भी मित्र पर किया जा सकता है, जिससे कि वह जीवन भर अनुकूल बना रह सके ।

मन्त्र जप के बाद कुंकुम या रोली से जो लकीरें खींची थी, मिटा दे और जमीन साफ कर ले ।

जब मेहरुन्निसा ने प्रेमी को जीवनभर के लिए वश में किया

मुगल बादशाहों में मेहरुन्निसा सबसे अधिक सुन्दर और आकर्षक राजकुमारी थी, जब उसके शरीर में यौवन आया ।

स्त्री वशीकरण मन्त्र

इस मन्त्र के द्वारा कठोर से कठोर हृदय रखने वाली स्त्री या प्रेमिका को भी वश में किया जा सकता है ।

अपने नीचे काले मृग का चर्म बिछाकर सामने सात लघु नारियल और सात सुपारी रख दे, फिर मूंगे की माला से ग्यारह माला मन्त्र जप के बाद लघु नारियल नदी या तालाब में फेंक दे तथा उन सुपारियों में से किसी एक सुपारी का टुकड़ा मनोवांछित स्त्री या प्रेमिका को खिलादे तो वह निश्चय ही जीवन भर वश में रहती है, और कभी भी छोड़कर नहीं जाती ।

मन्त्र

अमुक कामिनी आठा भाटा शूल मकाला पावल अंचाला ॐ ठं ठं ठं ।

यह प्रयोग सिद्ध है, और आश्चर्यजनक रूप से प्रभाव पूर्ण है'अमुक' की जगह प्रेमिका का नाम बोले ।

ने निश्चय कर लिया कि मैं हर हालत में इस हीना को पाकर रहूँगा परन्तु न ताकत के बल पर वह उद्देश्य में सफलता पा सकता था,और न धन दौलत के लालच पर,।

मकूक उस जमाने का साबर विद्याओं का अ... जानकार था, उसके पास वशीकरण के ऐसे ऐसे प्रयं... थे, कि जो बन्दूक की गोली की तरह अपना ...

भूत उतारने का मन्त्र

शुक्रवार से शुरू कर अगले शुक्रवार तक नित्य ग्यारह माला रात को फेर निम्न मंत्र की सिद्ध ... समय सामने तेल का दीपक लगे और हनुमान की चौकी जो कि ताबीज के आकार की होती है, ... उस चौकी पर नजर डालता हुआ हकीक माला से मन्त्र जपे ।

अगले शुक्रवार को जब मन्त्र पूरा हो जाय तो चौकी को काले धागे में पिरोकर दाहिनी ... पर बांध दे जिससे कि जीवन भर उसकी रक्षा रहेगी और कोई तकलीफ नहीं होगी ।

फिर जब किसी को भूत प्रेत लगा हो तब चिमटे से नीचे लिखे मन्त्र का तीन बार उच्चा... करे तो उसका भूत-प्रेत चीखता चिल्लाता हुआ भाग जाता है, और फिर कभी भी उसे कष्ट नहीं होता ।

मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू का पिण्ड प्राण छोड़े देव दानव भूत प्रेत डाकिनी तुरन्त छोड़े दूसर ठौर करे, इसको रक्षा हनुमत बीर करे, जो न करे तो मां अंजनी की दुहाई, सबद साचा पिण्ड ... फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

जैन साहित्य में

साबर प्रयोग

साबर प्रयोग अपनी विविधता प्रामाणिकता और अचूकता के लिए विख्यात है, इनका प्रभाव तुरन्त और शीघ्र होता है, जैन साहित्य में भी साबर मन्त्रों पर विशेष ध्यान दिया है और इस बात को स्वीकार किया है कि ये मन्त्र दिखने में भले ही सीधे-सरल और सामान्य प्रतीत हों परन्तु इनका अचूक प्रभाव होता है।

पूरे जैन साहित्य में सैकड़ों हजारों उदाहरण दिए गये हैं जिससे यह पता चलता है कि उच्च कोटि के योगियों, यतियों और मुनियों ने साबर मन्त्रों के माध्यम से समाज का दुःख दूर किया है और उनके कार्य सुधारे हैं, कई बार इन प्रयोगों को आजमाया है और प्रत्येक बार ये प्रयोग सिद्ध हुए हैं।

नीचे मैं जैन साहित्य में से कुछ महत्वपूर्ण प्रयोग दे रहा हूं जो कई बार आजमाये हुए हैं और जिनका असर प्रत्येक बार प्रामाणिकता के साथ सफल अनुभव हुआ है।

व्यापार लाभ प्रयोग

व्यापार वृद्धि बिक्री बढ़ाने और निरन्तर लाभ होने के लिए इस प्रयोग को प्रामाणिक बताया है, बुधवार के दिन अपने सामने "समुद्र फेन गुटिका" किसी पात्र में रख दे और उसके सामने विजय माला से २१ माला मन्त्र जप करे। इस प्रकार केवल तीन दिन प्रयोग करे, मन्त्र पढ़ते समय सफेद धोती पहने, इसके अलावा शरीर पर अन्य कोई वस्त्र न हो, अपना मुंह पूर्व दिशा में रखे।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यें अर्हं नमः।

जब तीन दिन प्रयोग समाप्त हो जाय तब वह विजय माला गले में धारण कर ले और बहसिद्ध की हुई 'समुद्र फेन गुटिका' दुकान में या गल्ले में अथवा जहां पर रुपये पैसे रखते हैं, वहां रखे तो व्यापार निरन्तर बढ़ता ही रहता है, लक्ष्मी समुद्र से उत्पन्न हुई थी, समुद्र फेन भी लक्ष्मी का ही प्रतीक माना गया है, अतः उस पर यह प्रयोग प्रमाणित रहता है, विजय माला में एक मनका स्फटिक दूसरा रुद्राक्ष तीसरा मूंगा का होता है, इस प्रकार से पूरी माला गूंथी हुई होती है।

वस्तुतः प्रत्येक व्यापारी बन्धु को यह प्रयोग करना ही चाहिए।

रोग नाशक प्रयोग

घर में किसी को बुखार आ गया हो, या किसी प्रकार का रोग हो या ऐसी स्थिति बन गई हो कि घर में कोई न कोई रोगी बना रहता हो रोग पर बराबर

Anil kumar

चर्चा होती रहती हो और रोग नियन्त्रण में नहीं आ रहा हो या बीमारी से परेशान हो गया हो तो यह प्रयोग अचूक माना है।

किसी भी शुक्रवार को अपने सामने तीन मूंगे के टुकड़े रख दे, जो मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो, फिर इस पर जलधार चढ़ावे और फिर दूध से धोकर फिर जल चढ़ावे, जल चढ़ाते समय निम्न मन्त्र का १०८ बार उच्चारण करे, इसके बाद मूंगे के टुकड़े निकाल कर अलग रख दे, और वह दुग्ध मिश्रित जल पूरे घर में छिड़क दे तथा एक चम्मच रोगी को पिला दे।

इस प्रकार मात्र तीन दिन प्रयोग करे तो घर से बीमारी हमेशा-हमेशा के लिए चली जाती है, और रोगी को तुरन्त आराम मिलता है।

मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लौं क्लौं अर्हं नमः।

वस्तुतः यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और महत्वपूर्ण है।

आत्म रक्षा प्रयोग

आजकल चारों तरफ शत्रु और विरोधी बढ़ गये हैं, न मालूम कब कौन हमला कर दे, अथवा कोई तांत्रिक प्रयोग कर दे तो जीवन बरबाद हो सकता है।

इसकी रक्षा के लिए आत्म रक्षा प्रयोग है, जिसका भी समाज में नाम है, या जिसके पास भी धन-दौलत है, उसको नित्य यह प्रयोग कर देना चाहिए.इसमें "आत्म रक्षा गुटिका" अपने सामने रखकर मात्र ग्यारह बार मन्त्र उच्चारण कर वह गुटिका पुनः अपने स्थान पर रख दे, तो रक्षा प्रयोग का प्रभाव चौबीस घण्टे रहता है. यह गुटिका मन्त्र सिद्ध होनी चाहिए, और इसे यात्रा के समय या बाहर जाते समय अपने साथ ले जा सकते है, इसमें केवल ग्यारह बार मन्त्र जप ही पर्याप्त है।

जब सब प्रयोग असफल हों तब यह करें।

यदि कोई स्त्री या प्रेमिका वश में नहीं होती हो, तो यह रामबाण प्रयोग है, और इससे सफलता मिलती है।

'वशीकरण गुटिका' लेकर शुक्रवार के दिन उस पर चन्दन, कुंकुम और सिन्दूर बराबर मात्रा में लेकर लगा दे, फिर निम्न मन्त्र की एक माला फेरे. इसमें 'वशीकरण माला' का ही प्रयोग होता है, माला पूरी होने पर वशीकरण गुटिका पर लगाया हुआ सिन्दूर, चन्दन. कुंकुम को परस्पर मिलाकर अपने ललाट पर बिन्दी लगा ले और जेब में वशीकरण गुटिका रख दे।

इसके बाद वह सम्बन्धित प्रेमिका के सामने जावे तो वह जीवन भर के लिए वश में हो जाती है, यदि यह संभव न हो तो उसका फोटो सामने रखकर उसे प्रेम से देखे तब भी वह स्त्री वश में हो जाती है।

मन्त्र

ॐ कामदेवाय काम वशं कराय अमुकस्य हृदयं स्तम्भय स्तम्भय मोहय मोहय वशमानय स्वाहा।

इसमें 'अमुकस्य' के स्थान पर उस प्रेमिका का नाम उच्चारण करे जिसे वश में करना हो।

मन्त्र

पढम हवई मंगलं वजमह शिलामस्तकोपरि णमो अरहंताण अंगुष्ठयोः णमो सिद्धाणं तर्जन्योः णमो आयरियाण मध्यमयो णमोउवज्झायाणं अनामिकयो णमो लोएसव्वसाहूणं कनिष्ठकयोः एसो पंच णमोकारो वजमइ प्राकारं, सव्वपावप्पणासणे जलभृतरवातिका मंगलाण च सव्वेसिं खादिरांगार पूर्ण खातिका।

वस्तुतः इस मन्त्र का एक दो बार उच्चारण करना भी सिद्धिदायक माना गया है

मनोकामना सिद्धि

हमारे सामने नित्य कई समस्याएं और कार्य उपस्थित होते है, जिनके सम्पन्न होते से प्रसन्नता और अनुकूलता प्राप्त होती है, परन्तु ऐसे कार्यो की सम्पन्नता में बाधाएं भी आती रहती है, यदि घर से यह प्रयोग करके निकले तो निश्चय ही उसका सोचा हुआ कार्य सफल होता ही है।

प्रातः उठकर सफेद आक के बने हुए गणपति के सामने मात्र ग्यारह बार इस मन्त्र का उच्चारण कर ले, और प्रार्थना करे कि यह कार्य आज मेरा सिद्ध हो जाय, गणपति के सामने गुड़ का भोग लगा दे, फिर कार्य के लिए घर से निकल जाय तो वह कार्य अवश्य ही सफल होता है, गुड़ का जो भोग लगाया हुआ है,वह घर में या बाहर बांट दे।

मन्त्र

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमः।

वस्तुतः यह सिद्धि प्रयोग है, श्वेतार्क गणपति बड़ी

इससे तो पत्थर भी वश में हो जाता है

यदि कोई पुरुष या प्रेमी वश में नहीं होता हो, प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं मिल रही हो तो प्रामाणिक प्रयोग है, और इससे सफलता मिलती है।

मन्त्र सिद्ध वशीकरण गुटिका शुक्रवार के दिन अपने सामने रखे और उस पर सिन्दूर, कुंकुम तथा चन्दन को बराबर मात्रा में मिलाकर पानी मिलाकर गाढ़ा सा लेप करके उस गुटिका पर लगा दे और फिर वशीकरण माला से १०८ बार निम्न मन्त्र का उच्चारण करे।

मन्त्र

ॐ ह्रीं मम अमुकं वशी कुरु कुरु स्वाहा।

इसमें अमुकं के स्थान पर प्रेमी के नाम का उच्चारण करना चाहिए, मन्त्र जप के बाद यह माला गले में धारण कर ले और वशीकरण गुटिका पर लगे हुए लेप से अपने ललाट पर बिन्दी लगा ले और फिर वह प्रेमी से मिलें तो निश्चय ही वह जीवन भर के लिए वश में हो जाता है, यदि प्रेमी उपलब्ध नहीं हो तो उसके फोटो के सामने प्रेम से देखे तो भी वशीकरण प्रयोग सम्पन्न हो जाता है, और वह वश में हो जाता है।

यह प्रयोग सिद्ध है, और कई बार आजमाया हुआ है।

कठिनाई से प्राप्त होते है, परन्तु मन्त्र सिद्ध गणपति प्राप्त हो जाय तो जरूर घर में स्थापित कर लेने चाहिए क्योंकि यह प्रयोग कई-कई पीढ़ियों तक उपयोगी है, और वह गणपति कई पीढियों के लिए सहायक बने रहते हैं।

५- नवग्रह अरिष्ट निवारक प्रयोग :

ग्रहों का प्रभाव होता ही है, मगर जैन साहित्य में एक ऐसा भी प्रयोग है, जिससे किसी भी प्रकार के ग्रह का दोष समाप्त हो जाता है, और उसका अशुभ फल मिटकर वह शुभ फल देने लग जाता है।

ताम्रपत्र पर अंकित नवग्रह यन्त्र को अपने सामने रख दे और निम्न मन्त्र की एक माला फेरे—इस प्रकार ग्यारह दिन तक करने से छः महीने तक अशुभ ग्रहो का दोष व्याप्त नहीं होता, छः महीने के बाद ग्यारह दिन का पुनः प्रयोग किया जा सकता है।

यों यदि व्यक्ति चाहे तो नित्य ग्यारह बार इस मन्त्र का उच्चारण कर दे, तब भी उसके जीवन में ग्रहों की अशुभ बाधा व्याप्त नहीं होती।

मन्त्र

सूर्य मंगल — ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं
चन्द्रमा शुक्र — ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं
बुध बृहस्पति — ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं।
शनि राहु — ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं।

वस्तुतः यह आजमाया हुआ प्रयोग है, और नवग्रह यन्त्र के सामने यदि नित्य ग्यारह बार उच्चारण किया जाय, तो उसके सारे काम सफल होते रहते हैं, और किसी प्रकार की कोई अड़चन या बाधा नहीं आता।

६–फौजदारी दीवानी मुकदमा निवारण प्रयोग

चाहते या नहीं चाहते हुए भी कई बार मुकदमों से उलझना पड़ता है, और ऐसी स्थिति में जीतना प्रतिष्ठा का प्रश्न बन जाता है,यह प्रयोग महत्वपूर्ण है,मुकदमें के दिन विजय यन्त्र के सामने निम्न मन्त्र की एक माला अर्थात

पति वशीकरण प्रयोग :

यदि पति का मन भटक गया हो, किसी दूसरी स्त्री में आसक्त हो गया हो या उससे प्यार नहीं मिलता हो तो यह प्रयोग निश्चय ही सफलतादायक है।

शुक्रवार के दिन तीन हकीक पत्थर तथा पति के पैरों के नीचे की धूल या कंकर लेकर किसी पात्र में रख दे, और फिर तेल का दीपक लगाकर निम्न मन्त्र की एक माला फेरे।

मन्त्र

ॐ नमो रत्न त्रयाय अमुकं मोहय वशमानय स्वाहा।

फिर वह माला (इसमें वशीकरण माला का ही प्रयोग होता है) गले में धारण कर ले और वह पैरों की धूल तथा तीनों हकीक पत्थर लाल कपडे में बांधकर उसके साथ पति के फोटो को लपेट दे जब तक वह फोटो उन हकीक पत्थरों के साथ लिपटा हुआ रहेगा तब तक वह पति वश में बना रहेगा और उसकी बुरी आदतें छूट जायगी।

"अमुकं" के स्थान पर पति के नाम का उच्चारण करे।

१०८ बार उच्चारण करके जावे तो निश्चय ही उसके हक में ही निर्णय होता है, उस दिन जो भी बहस होती है, वह भी उसके हक में ही होती है, इससे मुकदमें के जीतने के आसार बढ़ जाते हैं, शत्रु या विरोधी पक्ष परास्त हो जाता है, वह या तो समझौता कर लेता है या अपनी हार मान लेता है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चक्रेश्वरी कार्यसिद्धि विजय देहि देहि स्वाहा।

वस्तुतः यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और पूर्ण सफलता देने में सहायक है।

७– वशीकरण प्रयोग

पहले दो दिन उपवास करे और तीसरे दिन फूल पर १०८ बार मन्त्र बोलकर वह फल या पुष्प जिसको भी दे वह वश में हो जाता है।

मन्त्र

ॐ नमो भगवउ अरहउ महाविद्या वशीकरण भगवइ ठः ठः ठः स्वाहा।

वस्तुतः यह सरल और सुविधाजनक प्रयोग है और इसको आजमाया जा सकता है।

८– परीक्षा में पास होने का प्रयोग

'सरस्वती यन्त्र'' के सामने यदि नित्य एक माला मंत्र जप करे और फिर परीक्षा दे तो वह परीक्षा में पास होता है अथवा नित्य इस मन्त्र की एक माला फेरे तो वह जो भी पढ़ता है उसे कंठस्थ हो जाता है और वह भूलता नहीं।

मन्त्र

ॐ ह्रीं नमः

वस्तुतः यह मन्त्र विद्यार्थियों के लिए और किसी भी प्रकार की प्रतियोगी या विभागीय परीक्षा देते समय

पत्नी वशीकरण प्रयोग

यदि पत्नी रूठ कर पिता के घर चली गई हो, बुलाने पर भी नहीं आती हो या उसका मन बदल गया हो तो यह प्रामाणिक प्रयोग हाथों हाथ सफलता देता है। वह पत्नी घर आ जाती है, और जैसा कहे वैसा ही करती है।

शुक्रवार के दिन अपने सामने तीन हकीक पत्थर रख दे और अपनी पत्नी का फोटो भी रख दे और फिर वशीकरण माला से निम्न मन्त्र की ग्यारह मालाए फेरे —

मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं ह्रीं हूं अमुक वशी मोहय फट्

ग्यारह माला मन्त्र जप के बाद वह वशीकरण माला पत्नी का फोटो और तीनों हकीक पत्थर लाल डब्बे में बांध कर किसी स्थान पर रख दे तो पत्नी की आशक्ति पति के प्रति तीव्र हो जाती है और वह पुराना द्वेष व मतभेद भुलाकर घर आ जाती है तथा पति का कहना मानती है।

यह आजमाया हुआ प्रयोग है और पूर्ण सिद्धिप्रद है।

विशेष रूप से उपयोगी है, यह आवश्यक है कि यह मन्त्र जप सरस्वती यन्त्र के सामने ही किया जाय जो कि मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो।

९– स्वप्न में प्रश्न का उत्तर जानने का प्रयोग

ऐसी कई समस्याएं या प्रश्न विचारणीय होते हैं जिनके बारे में तुरन्त निर्णय लेना होता है।

इस प्रयोग में रात्रि को पलंग पर बैठकर अपना प्रश्न कागज पर लिखकर तकिये के नीचे रख दे और फिर पलंग पर बैठे-बैठे ही २१ बार इस मन्त्र को पढ़कर सो जाय तो रात्रि को स्वप्न में उस प्रश्न का शुभाशुभ दिखाई दे जाता हैं, और उसके अनुसार कार्य करने पर सफलता मिलती है।

मन्त्र

ॐ शुक्ले महाशुक्ले ह्रीं श्रीं क्षीं अवतर अवतर स्वाहा

वस्तुतः यह जीवन में आजमाया हुआ प्रयोग है, और इससे जटिल प्रश्नों के उत्तर आसानी से प्राप्त हो जाते हैं।

१०- दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलने का प्रयोग

मंगलवार को 'सर्व सौभाग्य यन्त्र' जो कि ताबीज के आकार का होता है, अपने सामने रखकर उस पर केसर लगाकर निम्न मन्त्र की एक माला फेरे, इस प्रकार नौ दिन करे, दसवें दिन उस ताबीज को धागे में या चेन में पिरोकर गले में धारण कर ले तो दुर्भाग्य भी सौभाग्य में बदल जाता है।

मन्त्र

ऐं क्लीं ह्सौं कुण्डलिनी नमः

यह प्रयोग सैंकड़ों लोगों ने आजमाया है, और प्रत्येक को सफलता मिली है, वस्तुतः यह प्रयोग शीघ्र सिद्धि-प्रद है।

प्रेमिका मिलन प्रयोग

यदि सामाजिक बन्धनों के कारण या दो परिवारो के बीच द्वेष के कारण अथवा परस्पर मतभेद हो जाने की वजह से प्रेमिका का मन बदल गया हो, और वह नहीं मिलती हो तो यह प्रयोग रामबाण की तरह असर करता है, और प्रयोग पूरा होते ही वह स्वय आकर प्रेमी से मिलती है, तथा उसका कहा मानती है।

शुक्रवार के दिन लोबान धूप लगा दे, अपने सामने ही वशीकरण गुटिका रखकर उस पर निम्न मन्त्र की ग्यारह मालाए फेरे—

मन्त्र

ॐ अमुकं रूपमालिनी नमः।

इसमें 'अमुक' के स्थान पर प्रेमिका का नाम ले,जब ग्यारह मालाएं पूरी हो जाय तब मन में यह भावना दें कि प्रेमिका तुरन्त आकर मिलें तथा फिर लाल कपडे में प्रेमिका का चित्र तथा "वशीकरण गुटिका" लपेटकर किसी स्थान पर रख दे तो चौबीस घण्टे के भीतर-भीतर प्रेमिका का संदेश प्राप्त हो जाता हैं या वह स्वयं आकर मिलती है।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और निश्चय ही सिद्धिदायक है।



११– किसी भी प्रकार का जहर उतारने का प्रयोग

चाहे बिच्छू या सांप ने काटा हो और जहर चढ़ गया हो, तो उस काटे हुए स्थान पर हाथ फेरते हुए इक्कीस बार इस मन्त्र को पढ़कर फूंक देने से जहर उतर जाता है।

मन्त्र

ॐ चण्डे फुः

वस्तुतः इस प्रयोग को आजमाना चाहिए और समाज के उपयोग के लिए इसका प्रयोग करना चाहिए।

१२– गर्भ पतन न होने का प्रयोग

जिन स्त्रियों के शीघ्र प्रसव हो जाता है, या कुछ महीनों में ही बच्चा उतर जाता है या गिर जाता है, तो यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

किसी को भी वश में करने का प्रयोग

अधिकारी, नेता, माता-पिता, व्यापारी, प्रेमी, प्रेमिका या कोई भी हो, इस प्रयोग से उसे अपने वश में किया जा सकता है, और उससे मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवाया जा सकता है।

रविवार के दिन ठीक १२ बजे दिन को पूर्व दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने 'वशीकरण गुटिका' रख दे और वशीकरण माला से निम्न मन्त्र की ग्यारह मालाएं फेरे।

मन्त्र

ॐ भगवति विद्या मोहिनी अमुकं आकर्षय आकर्षय हुं

मन्त्र जप पूरा होने पर वशीकरण माला गले में धारण कर ले और 'वशीकरणगुटिका' को जमीन में गाड़ दे तो वह निश्चय ही वश में हो जाता है, मन्त्र में जहां "अमुक" शब्द आया है, वहां उस व्यक्ति का नाम लेना चाहिए जिसे वश में करना हो।

मन्त्र जप के बाद 'वशीकरण गुटिका' जमीन में गाड़ देनी चाहिए, वह गुटिका जब तक जमीन में गड़ी हुई रहेगी तब तक वह व्यक्ति या स्त्री वश में रहेगी और जैसा कहेंगे वैसा ही कार्य करेगी।

यह तीक्ष्ण प्रभावशाली और शीघ्र सिद्धिदायक प्रयोग है, इसका वार कभी भी खाली नहीं जाता।

मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त "गर्भ रक्षा यन्त्र" को मंगलवार के दिन लाल धागे में निम्न मन्त्र बोलते हुए २१ गांठ लगावे, बीच में उस तावीज को पिरो दे, फिर वह धागा कमर में बांध दे तो उसका गर्भ-पतन नहीं होगा, नौ मास पूरे होने पर सुखपूर्वक पुत्र उत्पन्न होने के बाद ही उस डोरे को खोलकर नदी या तालाब में विसर्जित करना चाहिए।

मन्त्र

ॐ पद्म पादीव ह्रीं ह्रीं ह्रां ह्रां फट् ।।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है,और पूर्ण प्रभावयुक्त है।

१३– स्त्री वशीकरण प्रयोग

वशीकरण गुटिका और सरसों लेकर ६० बार मन्त्र पढ़कर जिसके माथे पर डाले तो वह स्त्री निश्चय ही वश में होती है, यह प्रयोग आजमाया हुआ है।

मन्त्र

ॐ जलि पाणि उंतालि फट् स्वाहा।

वस्तुतः यह प्रयोग महत्वपूर्ण है।

१४- पुरुष वशीकरण प्रयोग

वशीकरण गुटिका और पुरुष के पैर की धूल या कंकर हाथ में लेकर साठ बार मन्त्र बोलकर वह गुटिका और धूल पुरुष पर डाले अथवा जमीन में गाड़ दे तो निश्चय ही वह पुरुष जीवन भर वश में रहता है।

मन्त्र

ॐ नमो भगवते वशं करि स्वाहा।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और निश्चय ही इसमें सफलता प्राप्त होती है।



१५– पुरुषतत्व प्राप्ति प्रयोग

यदि पुरुषत्व में कमजोरी हो या काम कला में सक्षमता अनुभव न होती हो तो यह प्रयोग पूर्ण सिद्धि-दायक है।

'शुक्र गुटिका' जो कि तावीज के आकार की होती है, लेकर शुक्रवार के दिन काले धागे में पिरो ले और फिर नीचे दिया हुआ मन्त्र सात बार पढ़कर सात गांठे लगा ले और वह धागा कमर में बांध दे तो उसमें पुरुषत्व वृद्धि होती है, वीर्य स्तंभित रहता है, और काम कला में पूर्ण सुख अनुभव करता है।

मन्त्र

ॐ शुक्र कामाय स्वाहा।

यों तो जैन साहित्य में हजारों सिद्ध अनुभूत प्रयोग है, पाठकों के लिए कुछ प्रयोग इस लेख में दिये हैं, और ये सभी सिद्ध सफल एवं प्रभावपूर्ण है।



शाहों के शाह : साबर शाह

साबर शाह देश का ही नहीं विश्व का सबसे श्रेष्ठ सिद्ध कहा जा सकता है, साबर मन्त्रों की जिस ऊंचाई पर वह पहुंचा है, उसकी तुलना आज किसी अन्य से नहीं की जा सकती ।

साबर शाह के पास ऐसे साबर मन्त्र और सिद्धियां रही है, कि उसके माध्यम से इस विश्व में कुछ भी सम्भव किया जा सकता है, उसके बारे में ८०० पृष्ठों का प्रामाणिक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है ।

पढ़िये कुछ अन्तरंग झांकियां प्रामाणिक मन्त्र और विधियों के साथ—

साबर शाह दिखने में आधा पागल था, अपने आप में देखकर और मस्त रहने वाला साधु था, मैं जब उनसे मिला तब वह अपनी प्रसिद्धि के उच्चतम शिखर पर था पाकिस्तान के सक्खर प्रान्त में खानपुर के पास एक शिवालय में उसका डेरा था, पहली बार में ऐसा लगा कि इसमें कुछ असाधारण क्षमताएं हैं, इसके पास कुछ ऐसे मन्त्र और विधियां है जो सामान्यत: अनुभव नहीं होती, मैं उनके पास लगभग तीन वर्ष तक रहा और मैंने इन तीन वर्षों में हजारों चमत्कार देखे जिसपर सहसा विश्वास नहीं आता परन्तु वे सभी दृश्य, वे सभी प्रयोग और घटनाएं सूर्य की तरह स्पष्ट और प्रमाणिक रही है, मैंने स्वयं उनके पास से कई विद्याएं और साधनाएं सीखी हैं तथा धड़ल्ले से उनका प्रयोग करता हूँ, मैं चेलेन्ज देता हूँ कि संसार का कोई भी व्यक्ति आकर इन घटनाओं और चमत्कारों को देख सकता है ।

बाद में साबर शाह की जीवनी अंग्रेजी में प्रकाशित हुई, प्रकाशित होते ही तहलका सा मच गया और सैकड़ों हजारों भारतीय और विदेशी उसके पास जमा होने लगे, साबर शाह एकान्तप्रिय और अपने आप में मस्त रहने वाला व्यक्तित्व था, भीड़भाड़ से उसको चिढ़ थी अत: एक दिन वह चुपचाप वहां से निकल गया और उसके बाद उसका कुछ पता नहीं चला ।

इसके बाद साबर शाह से मेरी भेंट नहीं हुई परन्तु उसके बिताये हुए वे तीन वर्ष मेरी पूरी जिन्दगी के स्वर्णिम दिन थे, जब मैंने उनसे साबर साधनाओं के ज्ञान को प्राप्त किया, आज पूरे भारत वर्ष में मेरा जो

भी नाम और मोहरत है, वह सावर शाह की दी हुई है।

जब शिवालय को ही हवा में उठा दिया

खानपुर में शिवालय में रहने से पहले वह सक्खर में दरिया के किनारे शिवालय में रहता था, शिव का वह भक्त था और घण्टों भगवान शिव के सामने बैठकर आराधना स्तुति या मन्त्र जप करता रहता था, कुछ कारणों से उसे सक्खर से हट कर खानपुर में नाले के सामने शिवालय में अपना डेरा डंडा जमाना पड़ा परन्तु उसके मन में कचोट यही थी कि शिव मुझसे छूट गया है क्योंकि सक्खर वाले मन्दिर से उसे बहुत लगाव था।

जब खानपुर आये तीन चार महीने हो गये तो एक दिन मुझसे कहा—या तो मैं सक्खर चला जाऊंगा या फिर उस मन्दिर को ही यहां उठा ले आऊंगा, मैंने कहा कि पूरे के पूरे मन्दिर को नीव सहित उठाकर लाना क्या संभव है ? उस समय मेरे पास एक अंग्रेज विलियम ह्यूम और मिस मेरी भी बैठी थी, बाद में ह्यूम ने प्रामाणिक चित्रों के साथ सावर शाह की जीवनी लिखी थी, सावर शाह मेरी शंका सुनकर दो क्षण के लिए मुस्कराया। और बोला, सावर-मन्त्रों से कुछ भी संभव है, और उसने पास में पड़ी काली कम्बल ओढ़ ली तथा मन्दिर के बाहर आये, शिवालय के पास में एक खाली जमीन समतल पड़ी थी, सावर शाह ने उस जमीन को

लड़की से लड़को करे, यह सावर की ख्यात

यह एक महत्वपूर्ण सिद्धि है, और सावर शाह ने इसके माध्यम से कई लड़कों को लड़कियां और कई लड़कियों को पूर्ण रूप से लड़के बनाये, यह सब कुछ मन्त्रों के माध्यम से किया जिसका मैं प्रत्यक्ष गवाह हूं, आज भी ऐसे बनाये हुए कई लड़के-लड़कियां जीवित होंगी।

सावर शाह ने कृपा कर इस सम्बन्ध में जो विधि बताई थी, वह इस प्रकार है—

सिद्धि के लिए आबादी से दूर किसी झरने या नदी के किनारे एक बड़ा गोल चक्र बनाकर उसमें बैठ जाय और सामने हकीक के तीन सौ एक दाने रख दे, फिर यह मन्त्र एक-एक दाने पर पढ़ता हुआ दाना दूसरी प्याली में रखता जाय, जब तीन सौ एक मन्त्र पूरे हो जाय तो स्नान कर ले, इस प्रकार इक्यावन दिन करे, इस प्रकार से यह सिद्धि उसे प्राप्त हो जाती है, और वे तीन सौ एक दाने चांदी के तार में पिरोकर गले में पहन ले, इसके बाद जब किसी लड़के को लड़की या लड़की को लड़का बनाना हो तो उसे देखकर इसी मन्त्र का तीन सौ एक बार उच्चारण उनके सामने कर दे, प्रत्येक मन्त्र उच्चारण के बाद फूंक मारे तो प्रयोग सिद्ध हो जाता है, और तीन दिन के अन्दर-अन्दर वह पूरी तरह से लड़का या लड़के से लड़की बन जाती है, शरीर की बनावट में कोई अन्तर नहीं आता और आगे चल उनके सन्तान भी होती है।

मन्त्र

पर्वत पर्वत अंजनी पुत्र जने हनुमन्त लंगोट दरियाही खावे लौंग सुपारी जायफल पान का बीड़ा लगावे तेल का सिन्दूर बांध मूठ करे काया बदल दे ओसान दुहाई माता अंजनी को शबद साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

वस्तुतः यह एक सफल और सिद्ध प्रयोग है।

देखा और चिमटे से हवा में ही कुछ मन्त्र लिखे।

हमने देखा कि पांच सात मिनट में ही ऊपर गड़गड़ाहट की ध्वनि हो रही है, और फटी - फटी आंखों से हम करीब पन्द्रह बीस लोगों ने देखा कि अदृश्य लोग पूरे के पूरे मन्दिर को हवा में उठाये ला रहे हैं, दूसरे ही क्षण उस खाली जमीन पर वह मन्दिर आकर थंम गया।

आज बीसवीं शताब्दी में पाठकों को मेरी बात पर आश्चर्य हो सकता है परन्तु उस शिवालय के पास में ही दूसरा शिव मन्दिर आज भी विद्यमान है और पूरा का पूरा तिरछा पड़ा हुआ है, एक तरफ नींव और मन्दिर का भी कुछ हिस्सा जमीन के अन्दर धंसा हुआ है और दूसरी तरफ नींव के पत्थर भी जमीन के बाहर ही दिखाई दे रहे हैं, इतना बड़ा मन्दिर, कि जिसमें पांच सौ लोग आराम से खड़े होकर शिव का पूजन कर सके, वह मन्दिर तिरछा खड़ा है और लोग आज भी उसे देखकर आश्चर्य ही करते हैं, पाकिस्तान जाने वाले वास्तुकार उस मन्दिर को देखने अवश्य जाते हैं, क्योंकि पूरा मन्दिर ६५ का कोण बनाता हुआ तिरछा खड़ा है।

मैं और ह्यूम दूसरे ही दिन इस सत्यता का पता लगाने के लिए सक्खर गये तो वहां के लोग आश्चर्य चकित थे क्योंकि समुद्र के किनारे जहां मन्दिर था वहां उसका नामोनिशान भी नहीं था और बड़ा सा गड्ढा बना हुआ था, ऐसा प्रतीत होता था कि नींव सहित ही किसी ने उस मकान को उड़ा लिया हो।

ह्यूम के ग्रन्थ "साबर शाह : ए मिरेकल" में ये दोनों ही चित्र प्रामाणिकता के साथ प्रकाशित हैं।

जहां भूत प्रेत काम करते थे

साबर शाह अधिकतर अकेले ही रहते थे, पूरे मंदिर पर उनका अधिकार था परन्तु हम देखते थे, कि पूरा मंदि

भूत-प्रेत तो घर के नौकर-चाकर है

साबर शाह ने अपने जीवन में भूत-प्रेतों से विविध काम लिये और असम्भव को संभव कर दिखाया, मेरे अत्यधिक आग्रह पर उन्होंने भूत-प्रेतों को वश में कर मनोवांछित कार्य कराने की जो सिद्धि बताई थी, वह इस प्रकार हैं।

अमावस्या की रात्रि को श्मशान चला जाय और मुर्दे की भस्म अपने नीचे बिछाकर उस पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर सर्वथा नग्न बैठ जाय और फिर बिना किसी माला के इस मन्त्र का ग्यारह दिन में सवा लाख मन्त्र जप करे, बारहवें दिन श्मशान के सारे भूत-प्रेत दिखाई दे तो घबराये नहीं।

मन्त्र

शहजादे के सैयद तुम्हारी बात चलो हमारे साथ कहूं सो बजाओ बताऊं सो करो तो मैं दामनगिर रहूंगा मीर उस्ताद की दुहाई।

इस मन्त्र से निश्चय ही भूत-प्रेत वश में होते हैं, और उनको जो भी आज्ञा देते हैं, वे पूरी करते हैं, भूत-प्रेत केवल सिद्ध करने वाले को ही दिखाई देते हैं अन्य को नहीं।

यह प्रयोग हिम्मत वालों के लिये हैं, कमजोर दिल वाले इस प्रयोग को न करें।

स्वच्छ और जगमगाता रहता था, पूछने पर साबर शाह ने कहा कि जब भूत प्रेत बिना तनखाह लिये कार्य करते रहते हैं तो मुझे नौकरों की क्या जरूरत है, गायें रखने का साबर शाह को शौक था और अधिकतर दूध वे आने जाने वाले भक्तों को बांट देते थे, मैं ही नहीं अपितु सैकड़ों लोग और दर्शक देखते कि अदृश्य हाथों से गायों को चारा डाला जा रहा है, हमारे सामने बरतनों में दूध दुहा जा रहा है, बर्तन उठाये जा रहे हैं, पास में सुलगती हुई भट्टी पर कड़ाही रखी जा रही है, दूध गर्म हो रहा है, और लम्बे गिलासों में भर-भर कर मलाईदार दूध साबर शाह के सामने करीने से सजाये जा रहे हैं, और साबर शाह उन गिलासों को उठा-उठा कर आने वाले भक्तों को पीने के लिए दे रहे हैं, इतना गाढ़ा मलाईदार और सुगन्धित दूध मैंने बाद में जीवन में और कहीं नहीं पाया।

मैं तो उनके साथ ये साबर साधनाएं सीखने के लिए तीन वर्ष तक रहा था, और मैं देखता था, कि शिवालय के एक तरफ टाट का पर्दा तना हुआ था, और उसके पीछे रसोईघर था, जिसमें बरतन वगैरह पड़े थे। टाट के इस तरफ कुर्सी पर साबर शाह बैठे रहते, हम आठ दस लोग भी उनके सामने ही नीचे जमीन पर बैठे रहते, वे बातें करते जाते और बीच-बीच में आदेश भी

आत्माएं उड़ा देती हैं पूरे नगर को

साबर शाह अपने जमाने के महत्वपूर्ण साबर सिद्ध रहे हैं, उन्होंने एक दिन बातचीत में बताया कि साबर साधनाओं में कुछ ऐसी गोपनीय साधनाएं भी है, जिसके माध्यम से एक मन्दिर तो क्या पूरे नगर को उड़ाया जा सकता है।

उन्होंने अपने जन्म दिन पर प्रसन्न होकर मुझे यह साधना बताई थी, वह मैं अपने जीवन में पहली बार पत्रिका पाठकों के सामने प्रस्तुत कर रहा हूं।

किसी भी शुक्रवार को रात्रि को काली धोती पहन कर किसी कमरे में दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने लोबान धूप लगा दे फिर दो सियार सिंगी तथा दो "आत्मा आह्वान गुटिका" रख दे, इसके बाद निम्न मन्त्र का सिद्ध माला से मन्त्र जप करे।

मन्त्र

दगे खुदा मीर उस्ताद नागबदन पर किरायी ईसर चटि को कोसर बन्दन हमारा एक सौ एक आत्मा गाढ़ूं मोहल्ले कुनकुनी अली शाह समन्दर की।

इस मन्त्र को २१ दिन में सवा लाख मन्त्र जप करे, सिद्ध माला में दो हकीक, दो मूंगा, दो स्फटिक मनके पिरोये होते हैं, और प्रत्येक मनका मन्त्र सिद्ध होता है, २१ वें दिन एक सौ एक आत्माएं साधक के वश में होगी, वे मन्दिर को तो क्या पूरे नगर को उखाड़कर मनोवांछित स्थान पर ला सकती है, मकान में सोई हुई प्रेमिका या प्रेमी को पलंग समेत उठाकर हाजिर कर सकती है, और जो भी आज्ञा दे उसे पूरा करती है।

यह मन्त्र सिद्ध और परीक्षित है।

देते जाते, वह पर्दा अधूरा सा नाम मात्र के लिए टंगा रहता और अन्दर का सारा दृश्य और बरतन हम साफ साफ देख पाते थे।

हम देखते कि चूल्हा जल रहा है, और अदृश्य लोग पुड़ियां तल रहे हैं, हलवा बना रहे हैं, बरतन धोये जा रहे हैं, और सारा रसोई का काम सलीके से किया जा रहा है, पर इन सब में न तो कोई आदमी दिखाई देता और न कोई औरत। हां, बीच-बीच में साबरशाह हुक्म अवश्य देते जाते कि फलानी सब्जी बना लो या दही में फलानी-फलानी चीज डालकर दही बड़े बना लो, एक घण्टे में हो वहां जितने उपस्थित होते उन सबको छक कर भोजन कराया जाता और विविध तरह के व्यंजन तथा खाद्य पदार्थ थाली में परोसे जाते, जबकि हम ने कभी भी साबर शाह को बाजार से कोई सामग्री मंगाते हुए नहीं देखा।

वास्तव में ही साबर शाह के पास सैंकड़ों भूत-प्रेत काम करने वाले थे, और बराबर बिना थके हुए काम करते रहते थे।

सब कुछ ही मिनटों में लड़की को लड़का बना दिया

खानपुर में ही एक द्वारकेश सोनी थे, जो राजस्थान के ही कहीं के रहने वाले थे, परन्तु कई वर्षों से वहीं बस गये थे, पति-पत्नी दोनों ही शिव के और साबरशाह के भक्त थे और नित्य नियम से साबर शाह के चरणों में आते, उनकी उम्र लगभग ५६ वर्ष की हो गई थी, उनकी पत्नी भी ५० से ऊपर थी, और रजस्वला होना बन्द हो गया था, उनके एक ही लड़की थी, कोई लड़का नहीं था, इस बात का उन्हें बहुत दुःख रहता, पत्नी की तो यह इच्छा बराबर बनी रहती कि एक लड़का होता तो बहुत अच्छा रहता, परन्तु उम्र को देखते हुए यह किसी प्रकार से सम्भव नहीं था।

मुराद पूरी होने का यन्त्र

नीचे दिये हुए यन्त्र को चारपाई पर बैठकर सवेरे-सवेरे अपने भगवान का नाम लेकर उठने से पहले चारपाई पर ही किसी भी स्याही से हथेली पर लिखकर दो मिनट गौर से देखो, फिर माथे पर हाथ रखकर अपनी मुराद मांगो। इक्कीस दिन करो।

वं	श्रं	स्रं	ढं
१	११	२१	३१
४१	५१	६१	७१
कं	तं	रं	सं

इन दिनों में बुरी बातों से और नशे आदि से अपने आपको बचाओ, बाइसवें दिन उपवास रखो, चौबीसवें दिन मुराद पूरी होने की शर्तिया इत्तला मिलेगी और तीस दिनों में मुराद पूरी होगी, मुराद मुमकिन ही मांगी जानी चाहिए।

एक बार जोधनी लेखक डा० म ने साबर शाह को द्वारकेश और उसकी पत्नी की उपस्थिति में ही निवेदन किया कि द्वारकेश के कोई पुत्र नहीं है, और केवल एक १५-१६ साल की लड़की ही है, उनके एक पुत्र हो जाय तो बहुत अच्छा हो।

साबर शाह ने उचटती सी नजर द्वारकेश, उसकी पत्नी और उसकी बेटी पर डाली और हंस कर बोले, यदि इस लड़की को ही लड़का बना लें तो कैसा रहे।

द्वारकेश ने खड़े होकर विनम्रता से जवाब दिया जैसी आपकी इच्छा मगर मेरे घर में पुत्र हो तो मैं मरने के बाद भी सद्गति जाऊंगा, अन्यथा हम दोनों पति पत्नी की आत्माएं भटकती ही रहेंगी।

साबर शाह ने हम लगभग पचास साठ लोगों के सामने द्वारकेश की लड़की का वहीं पर खड़ा किया, उस समय अंग्रेज अधिकारी मिस्टर रोबर्ट भी बैठे हुए थे नगर कोतवाल मिस्टर ब्लेको भी उस समय संयोगवश

विवाह का इच्छाधारी प्रयोग

यह प्रयोग शुक्रवार से प्रारम्भ करे और सात दिन करे, एक बडे कोरे कागज पर बड़ा सा यन्त्र काली स्याही से बनाओ खाना पूरी कर लो, अपने नाम की जगह अपना पूरा नाम लिख दो। "इच्छा क्या है ? के स्थान पर विवाह लिखो" जिससे विवाह करना चाहे उसके बाप का नाम लिखो फिर इष्ट का नाम लिखो।

अपना नाम

इष्ट का नाम

ह	स	क	ट
प	म	च	ब

बाप का नाम

इच्छा क्या है

शुक्रवार से स्नान कर शुद्ध होकर केशर से नित्य एक यन्त्र बनाओ और फिर उस यन्त्र को मोली से लपेटकर सामने अगरबत्ती दीपक लगाओ, तथा फूलों के बीच रखकर जल में प्रवाहित कर दो, इस प्रकार सात दिन करो, तो अगले कुछ ही दिनों में लड़की का बाप अपनी लड़की का विवाह इच्छाधारी यन्त्र करने वाले के साथ स्वयं कर देगा।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है।

दो आत्माओं का मिलन

साबर मंत्रों के माध्यम से

कलियुग में साबर मन्त्र संजीवनी औषधी की तरह है, क्योंकि इनका प्रभाव तुरन्त और अचूक होता है, साथ ही साथ इन मन्त्रों की पांच विशेषताएं होती हैं जिनकी वजह से ये समाज में लोकप्रिय है --

१– ये मन्त्र सरल भाषा में और सीधे-सादे शब्दों से युक्त है ।

२– इन मन्त्रों की साधना में किसी प्रकार की जटिल साधना पद्धतियां और विधियां नहीं है ।

३– इन मन्त्रों और साधनाओं को कोई भी साधक कोई भी वर्ग या कोई भी जाति का व्यक्ति कर सकता है ।

४– इसके लिए विशेष उपकरण और साधनों सामग्री की आवश्यकता नहीं रहती ।

५– इनका प्रभाव निश्चित, तुरन्त और गहराई के साथ होता है, इसीलिए इन मन्त्रों की उपयोगिता बढ़ रही है ।

हमारे समाज में विवाह की समस्या सबसे अधिक पेचीदा और श्रम साध्य हैं, घर में लड़की बड़ी हो जाती है, तो उसके लिए प्रयत्न करने पर भी लड़का नहीं मिल पाता, लड़के की मांग इतनी अधिक होती हैं, कि गरीब बेटी का बाप उन आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता इस चक्कर में कभी-कभी तो बहुत सुन्दर और योग्य लड़कियां भी रह जाती है, बड़ी आयु होने पर भी उनका विवाह नहीं हो पाता और इससे उनके मन में विशेष कुंठा जन्म ले लेती है, जिससे उनका पूरा जीवन नैराश्य में परिवर्तित हो जाता है ।

मैंने अपने जीवन में सौ से ज्यादा साबर साधनाओं को सीखा है, और उन्हें आजमाया है, परन्तु चार पांच प्रयोग तो इतने अचूक और महत्वपूर्ण हैं, कि सहज ही विश्वास नहीं होता, इन साधनाओं को करते-करते ही अनुकूलता मिल जाती है या साधना सम्पन्न करने के बाद शीघ्र ही शादी के होने के आसार बन जाते है, सहज ही रिश्ता मिल जाता है, मनोवांछित घराना प्राप्त हो जाता है, जैसा चाहते हैं वैसा पति उपलब्ध हो जाता है, तथा बिना किसी हलचल या बाधा के विवाह सम्पन्न हो जाता है ।

नीचे मैं ऐसे ही महत्वपूर्ण प्रयोग दे रहा हूं जो कि मैंने सैकड़ों बार आजमाये हैं और प्रत्येक बार उनका रिजल्ट पूर्णतः अनुकूल अनुभव हुआ है, आवश्यकता है इन मन्त्रों पर विश्वास करने की, श्रद्धा के साथ प्रयोग करने की, और बताये हुए तरीके से सम्पन्न करने की यदि ऐसा किया जाता है तो निश्चय ही सफलता प्राप्त होती ही है ।

मनोवांछित पति की प्राप्ति के लिये

यदि आयु बढ़ गई हो और प्रयत्न करने पर भी विवाह नहीं हो रहा हो या जहां भी विवाह की बात चलाई जाय वहीं पर अड़चनें आती हो तो यह प्रयोग महत्वपूर्ण है, इस प्रयोग को वह लड़की स्वयं करे जो विवाह की इच्छुक है इस प्रयोग को सम्पन्न करने से महिने भर के भीतर भीतर उसकी सगाई या शादी हो जाती है तथा उसे मनोवांछित पति मिल जाता है ।



दो आत्माओं का मिलन

यह २१ दिन की साधना है, रविवार से इसका प्रारम्भ करना चाहिए, प्रातःकाल उठकर स्नान कर अपने बाल धो ले और उन्हें खुला ही रखे, फिर पूर्व दिशा की ओर मुंह कर सूर्य को प्रणाम कर सुन्दर वस्त्र धारण कर किसी भी प्रकार के आसन पर बैठ जाय और सामने "कामदेव हेत्वा गुटिका" रख दे, यह गुटिका मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होनी चाहिए, इस गुटिका को किसी पात्र में थाली या प्लेट में रख दे, पहले से इसे जल से स्नान कराकर पोंछकर पुनः स्थापित कर दे और ऊपर केशर का तिलक करे।

इसके बाद कमल गट्टे की माला से निम्न मन्त्र की तीन मालाएं फेरें।

मन्त्र

मच्छमो हाथी जर्द अम्बारी
उस पर बैठो कमाल खां की सवारी
कमाल खा कमाल खा मुगल पठान
बैठ चबूतरे पढ़े कुरान
हजार काम दुनियां का करे
एक काम मेरा कर
न करे तो तीन लाख तैंतीस हजार पैगम्बरों
की दुहाई।

मन्त्र जप के बाद वह गुटिका किसी एकान्त स्थान में रख दे, इस प्रकार २१ दिन करे, २१ दिन के बाद उस गुटिका को अपने चित्र के साथ लाल कपड़े में लपेट कर अलग स्थान में रख दे तो मन्त्र जप समाप्ति के बाद एक महीने के भीतर भीतर विवाह से सम्बन्धित बाधाएं दूर हो जाती है और अच्छे घर और लड़के के साथ सगाई आदि होने का योग बन जाता है, यह मन्त्र जप पूरी श्रद्धा के साथ सम्पन्न करे, एक समय भोजन मे कुछ भी ले सकते हैं।

विवाह बाधा योग व मंगली योग मिटाने के लिये

यदि लड़की की जन्म कुण्डली में विवाह बाधा योग हो जिसकी वजह से विवाह नहीं हो रहा हो, विवाह में अड़चनें आ रही हो, या कुण्डली में मंगल दोष हो तो ऐसी स्थिति में यह प्रयोग रामबाण की तरह है और इसका असर तुरन्त होता है।

इस प्रयोग से किसी भी प्रकार प्रकार का मंगल दोष समाप्त हो जाता है और उस बालिका की विवाह की संभावना बढ़ जाती है, इस प्रयोग से विवाह बाधा योग भी दूर हो जाता है, विवाह से सम्बन्धित ज्योतिष के अनुसार जो भी बाधाएं अड़चनें हो उन्हें दूर करके लिए यह राम बाण प्रयोग है और इसको मैंने आजमाया है।

यह प्रयोग रविवार से प्रारम्भ किया जाता है, इस प्रयोग को स्वयं लड़की या उसके माता - पिता अथवा

कोई पंडित सम्पन्न कर सकता है, रविवार के दिन प्रातः किसी पात्र में "सर्व बाधा निवारण मुद्रिका" रख दे और उसे दूध से धोकर पुनः जल से धोकर पोंछकर स्थापित कर दे फिर उस पर केशर का तिलक करे और मूंगे की माला से निम्न मन्त्र की ग्यारह माला मन्त्र जप करे।

इस प्रकार २१ दिन तक करे, जब २१वें दिन में प्रयोग समाप्त हो जाय तब २२ वें दिन वह मुद्रिका उस बालिका के किसी भी हाथ की किसी अंगुली में पहना दे जिससे जीवन में मंगली योग, विवाह बाधा योग और विवाह से सम्बन्धित समस्त दोष दूर हो जाते हैं और निश्चय ही महीने दो महीने के भीतर भीतर उस लड़की की सगाई या शादी सम्पन्न हो जाती है।

मन्त्र

ॐ सकल दोष बांधू मंगल बांधू उपद्रव बांधू
सातों द्वार नवकोट खोलूं श्री गोरखनाथ शब्द साचा
पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा

मनोवांछित पति की प्राप्ति के लिए

यदि किसी लड़के से प्यार चल रहा हो, और उसके साथ विवाह होने में बाधा आ रही हो, लड़की वालों की तरफ से या लड़के के घर वालों की तरफ से अड़चनें डाली जा रही हों, यह प्रयोग आजमाना चाहिए, इससे बाधाएं और विरोध समाप्त हो जाता है, और उसी लड़के से विवाह होने के अवसर बढ़ जाते हैं, जिससे वह विवाह करने की इच्छुक है।

रविवार के दिन भोजपत्र पर कुंकुम या केशर से निम्न यन्त्र बनावे और यन्त्र के ऊपर अपना नाम तथा यन्त्र के नीचे उस लड़के का नाम लिखे जिससे वह विवाह करना चाहती है।

लड़की का नाम
ह्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं ह्रीं
लड़के का नाम

फिर उस यन्त्र पर 'प्रिय आकर्षण गुटिका' रखकर निम्न मन्त्र की तीन मालाएं फेरें—

मन्त्र

ॐ नमो नमो वीर वेताल लाल मोहियो का हार लंका सो कोट समुद्र सी खाई चलो चौकी राजा रामचन्द्र की आई मन चाहा वर मिले नहीं तो हनुमान का चक्र गिरे।

तीन माला मन्त्र जप के बाद उसी भोजपत्र में वह गुटिका लपेट कर किसी सार्वजनिक स्थल या सड़क पर वह भोजपत्र और गुटिका चुपचाप रख दे तो यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है, और जिससे वह विवाह करना चाहती है, उसी के साथ विवाह हो जाता है।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और निश्चित ही सफलतादायक है।

यह मन्त्र अपने आप में महत्वपूर्ण है और इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद जल्दी से जल्दी उस लड़की का विवाह हो जाता है और बाद में पूरे गृहस्थ जीवन में किसी प्रकार की कोई अड़चन या परेशानी नहीं आती।

उस बालिका को चाहिए कि वह जीवन भर या विवाह के बाद तीन वर्ष तक उस मुद्रिका को अवश्य ही पहने रहे।

सुन्दर पत्नी प्राप्ति के लिए

लड़कियों की तरह लड़कों के लिये भी ऐसी समस्याएं आ जाती है कि समय पर उनका विवाह नहीं हो पाता या कोई न कोई बाधा आती रहती है, या तो लड़की पसन्द नहीं आती या मनमाफिक नहीं होती जिसकी वजह से जल्दी विवाह नहीं हो पाता या कोई न कोई बाधा आती रहती है।

यह प्रयोग ऐसे ही व्यक्तियों के लिए है जिनका विवाह जल्दी नहीं हो रहा हो या योग्य पत्नी नहीं मिल रही हो या इस सम्बन्ध में ज्योतिष की दृष्टि से कोई

मनोवांछित पत्नी की प्राप्ति के लिए

जिस लड़की से आपके प्रेम सम्बन्ध हैं, और सामाजिक बन्धनों या कुछ विशेष कारणों से उसी लड़की से विवाह होने में अड़चन आ रही हो या परिवार में विरोध बढ़ रहा हो तो यह प्रयोग निश्चय ही सफलता देने वाला है।

लड़के का नाम
ॐ क्रीं मैं मं ढ क्रीं ॐ
लड़की का नाम

भोजपत्र पर केशर से यह यन्त्र लड़का खुद शुक्रवार के दिन बनावे और ऊपर खुद का नाम तथा यंत्र के नीचे उस लड़की का नाम लिखे, फिर इस यन्त्र के मध्य में 'प्रिया आकर्षण गुटिका' रखकर निम्न मन्त्र की तीन मालाएं हकीक माला से फेरे।

मन्त्र

ॐ नमो महींदर पीर आप बडे गुणी गिरनार से उठे सब कुछ करे मेरी प्रिया मुझे मिलावे बाधा हटावे जो न करे तो गंगा जमना को धार उल्टी बहे।

तीन माला मन्त्र जप होने के बाद उसी भोजपत्र में वह गुटिका लपेट कर उसी दिन किसी सार्वजनिक या सड़क पर चुपचाप रख दे तो यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है, और जिससे वह विवाह करना चाहता है, उसी के साथ शीघ्र ही विवाह करने के आसार बन जाते हैं, अर्थात् अपने उद्देश्य में सफलता मिल जाती है।

यह प्रयोग उत्तम कोटि का पूर्ण सफलतादायक है।

बाधा हो अथवा किसी प्रकार की अड़चन हो तो यह प्रयोग तुरन्त सिद्धिदायक है और इसका असर गोली की तरह होता है।

यह प्रयोग उस युवक को स्वयं करना चाहिए जो कि विवाह का इच्छुक है, किसी भी शुक्रवार से यह प्रयोग प्रारम्भ किया जाता है, सुबह उठकर स्नान कर सफेद धोती पहन कर पूर्व दिशा की तरफ मुंह कर बैठ जाय सामने पात्र में "रतिप्रिया गुटिका" को जल से धोकर पौंछ कर उस पर केसर का तिलक करे और फिर हकीक माला से निम्न मन्त्र की तीन माला मन्त्र जप करे।

मन्त्र

ॐ कामरूप कामिनी त्रिभुवन मोहिनी सुन्दरी रति आवे
सात ताला तोड़ सात द्वार खोल हाजर हो मेरो कहियो करे
मेरे घर रहे, मेरो यह कारज न करे तो गुरु गोरख नाथ की दुहाई। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

यह २१ दिनों का प्रयोग है, २१ दिन के बाद वह

इच्छानुसार 'हां' भरने के लिए

प्रेमी या प्रेमिका में से कोई एक शादी करने का इच्छुक हो परन्तु प्रेमी की तरफ से या प्रेमिका की तरफ से स्वीकृति नहीं मिल रहा हो अथवा इन दोनों में से किसी का मन बदल गया हो तो यह प्रयोग करने पर उसके विचार अनुकूल बन जाते हैं और जैसा चाहते हैं, वैसी स्वीकृति मिल जाती है।

यदि लड़की का मन बदल गया हो और विवाह के लिए 'हां' नहीं भर रही हो तो यह प्रयोग लड़के को करना चाहिए, इसी प्रकार लडके का मन बदल गया हो और विवाह के लिए राजी नहीं हो तो यह प्रयोग लड़की को करना चाहिए।

शुक्रवार की रात अपने सामने 'हाजरा पीर चौकी' रख दे यह चांदी के ताबीज के आकार की होती है, और विशेष साबर मन्त्रों से सिद्ध होती है, फिर इसके सामने बैठकर हकीक माला से निम्न मन्त्र की पांच माला फेरे।

मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को वज्र मन वज्र किवाड़ बांधे दसों द्वार को बांधे उलट वेद बही को उछाले पहली चौकी हनुमान का दूसरो भैरव की कारज सिद्ध करे हां भरे कइयो करे जो न करे तो नृसिंह की आण।

इस प्रकार पांच माला पूरी होने के बाद वह चौकी अपनी जेब में रख दे, और दूसरे दिन किसी युक्ति से उस प्रेमी या प्रेमिका के शरीर से स्पर्श करा ले, ऐसा होने पर उसका मन बदल जाता है, और वह हां भर लेता है, यदि वह स्वयं उपस्थित न हो तो उसकी फोटो के साथ यह चौकी बांध दे, तब भी कुछ दिनों के भीतर-भीतर उसकी तरफ से 'हां' प्राप्त हो जाती है।

यह महत्वपूर्ण प्रयोग है, और इससे निश्चय ही कार्य सिद्ध होता है।

'रति प्रिया गुटिका' अपने फोटो के साथ लाल कपड़े में लपेट कर घर के किसी एकान्त स्थल पर रख दे।

इस प्रकार करने से महीने भर के भीतर-भीतर सुन्दर, सुशील कन्या के घर से विवाह का प्रस्ताव आ जाता है और धूमधाम के साथ विवाह सम्पन्न हो जाता है, वास्तव में ही यह प्रयोग महत्वपूर्ण प्रयोग है और इसको मैंने कई बार आजमाया है, इस प्रयोग से जन्म कुण्डली के तथा जीवन के दोष मिट जाते हैं तथा यदि मंगल योग हो तो भी मिट जाता है।

विवाह में अड़चन न आने का प्रयोग

सगाई हो जाने के बाद भी कन्या के पिता की सांस आफत में ही रहती है न मालूम किस प्रकार से विवाह सम्पन्न होगा, कोई अड़चन तो उपस्थित नहीं होगी, वर के पिता या बारातियों की तरफ से कोई समस्या तो नहीं आयेगी आदि ऐसी सैकड़ों आशंकाएं बराबर बनी रहती है।

साबर प्रयोगों में इससे सम्बन्धित भी एक महत्वपूर्ण प्रयोग है जो कि गोपनीय है इससे विवाह में किसी प्रकार की कोई बाधा या अड़चन आती ही नहीं और विवाह हंसी-खुशी, आनन्द-उमंग के साथ सम्पन्न हो जाता है।

यह एक दिन का प्रयोग है, शुक्रवार के दिन प्रातः उठकर कन्या का पिता, भाई या सम्बन्धी (यदि लड़के का विवाह हो तो उसका पिता या सम्बन्धी) स्नान कर पूर्व दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और ताम्बे के बर्तन में लगभग एक किलो पानी ले ले, उसमें "सर्व बाधा निवारण यन्त्र" मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त

प्रेमी-प्रेमिका में प्रेम बढ़े

यदि प्रेमी-प्रेमिका के परस्पर संबंध रहे हों और किसी कारणवश प्रेमी का मन बदल रहा हो या प्रेमिका के मन में फर्क आ रहा हो तो इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है, यदि प्रेमिका के स्वभाव या विचारों में अन्तर आया हो तो यह प्रयोग प्रेमी को करना चाहिए, इसी प्रकार यदि प्रेमी के व्यवहार में बदलाव आ रहा हो तो यह प्रयोग निश्चित रूप से प्रेमिका को करना चाहिए।

रविवार के दिन प्रातः किसी पात्र में 'आकर्षण मुद्रिका' रख दे और उसके सामने हकीक माला से निम्न मन्त्र की तीन मालाएं फेरे इस प्रकार पांच दिन तक करे।

मन्त्र

ॐ नमो राजा अनंग नमो रानी रति नमो बावन पीर चौसठ भैरू नमो देव-दानव नमो अनंगपाल मेरो कारज सिद्ध करो अमुक को मेरे वश में करो जो मैं कहूं वो करे आज्ञा माने वश में रहे

इसमें 'अमुक' के स्थान पर उसका नाम उच्चारण करना चाहिए जिसे वश में करना हो।

पांचवें दिन प्रयोग समाप्त कर वह मुद्रिका किसी भी हाथ की किसी भी अंगुली में धारण कर ले और फिर वह प्रेमी या प्रेमिका के सामने जावे तो उस अंगूठी पर नजर पड़ते हो उसका मन वशीकरण युक्त हो जाता है, और जिस प्रकार से हम चाहे वह करने लग जाता है।

यह प्रयोग प्रामाणिक है, और आजमाया हुआ हैं, इसका वार कभी भी खाली नहीं जाता।

न देना चाहिए, फिर उस पानी में लोहे की कील घुमाते एक घण्टे तक निम्न मन्त्र का बराबर जप करना हिए।

मन्त्र

ॐ नमो भैरवी तीनो लोक सप्तदीप
नव खण्ड बांधू आकाश पाताल बांधू दसों
दिशाएं बांधू
समस्त रोग शोक दुख उपद्रव उत्पात बांधू
मुहम्मद पीर की दुहाई ठं ठं ठं।

एक घण्टे बाद जल में से 'सर्व बाधा निवारण यन्त्र' काल कर घर में किसी स्थान पर स्थापित कर दे और स पूरे घर में छिड़क दे तो घर की रक्षा हो ती है, और विवाह से पूर्व, विवाह के बीच और वाह के बाद किसी प्रकार की कोई अड़चन या धा नहीं आती और न राज्य की तरफ से कोई बाधा आती है और न सामाजिक दृष्टि से कोई परेशानी उत्पन्न होती है, वास्तव में हो समझदार व्यक्तियों को विवाह से पूर्व इस प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न कर लेना चाहिए, यह प्रयोग लड़के या लड़को दोनों के विवाह के लिए एक सा ही है और अनुकूल है।

पूर्ण गृहस्थ सुख साबर प्रयोग

आजकल जैसी सामाजिक विवशताएं बन गई है, उससे पराये घर में लड़की भेजने में सौ-सौ आशंकाएं मन में व्याप्त होती है, कन्या को ससुराल में जाकर दुःख तो नहीं मिलेगा, कहीं पति पत्नी में जल्दी ही मतभेद तो नहीं हो जायेंगे, कहीं कन्या को मार तो नहीं देंगे ऐसी आशंकाएं मन में होनी स्वाभाविक है, ये आशंकाएं कन्या के पिता और स्वयं कन्या के मन में बनी रहती है।

मुझे एक उच्च कोटि के साबर मन्त्रों के सिद्ध व्यक्ति

पूर्ण गृहस्थ सुख साबर प्रयोग

यदि प्रेमी–प्रेमिका परस्पर विवाह करने को इच्-क हो और दोनों की रजामन्दी हो परन्तु किसी वजह लड़की के घर वाले या लड़के के घर वाले अथवा ों के परिवार वाले रजामन्द न हों तो यह प्रयोग त्वपूर्ण है और ऐसा प्रयोग करने पर घर वालों के बदल जाते हैं तथा वे विवाह के लिये हां भर लेते हैं

यह प्रयोग प्रेमी या प्रेमिका में से किसी एक को करना चाहिए। शुक्रवार के दिन स्नान कर पूर्व कीओर मुंह कर बैठ जाय और सामने दो मुट्ठी सरसों तथा दो गोमती चक्र रख दे फिर लोबान धूप लगा दे तथा हकीक माला से निम्न मन्त्र की तीन मालाएं फेरें —

मन्त्र

बिसमिल्ला मेहमंद पीर आवे घोड़े की अस-
री पवन को वेग मन को सभाले अनुकूल बनावे
भरे कहियो करे मेहमंद पीर की दुहाई सबद
चा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा

तीन माला मन्त्र जप के बाद दो पुड़ियाएं बनावे, पुड़िया में एक मुट्ठी सरसों तथा एक गोमती चक्र दूसरी पुड़िया मे भी रखे सरसों में से एक मुट्ठी सों तथा गोमती चक्र बांध दे और फिर एक पुड़िया और गोमती चक्र लड़की के घर मे स्वयं लड़की किसी स्थान पर डाल दे इसी प्रकार दूसरी पुड़िया लड़का स्वयं अपने घर मे किसी स्थान पर डाल दे तो दोनों परि-वार वालों के मन अनुकूल हो जाते हैं और विवाह के लिये स्वीकृति दे देते हैं।

यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण और निश्चय ही सफलता देने वाला हैं।

मुकदमें में सफलता प्राप्त करने का प्रयोग

यदि शत्रु ने मुकदमा दायर कर दिया हो और मुकदमे में सफलता मिलने की संभावना कम दिखाई दे रही हो तो यह प्रयोग अचूक है, ऐसा करने पर शत्रु स्वतः ही हतप्रभ और निराश हो जाता है, उसकी बुद्धि काम नहीं करती और कुछ ही दिनों में समझौता करने के लिए बाध्य हो जाता है।

रविवार के दिन काली धोती पहिन कर काले आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय तथा सामने "भैरव और भैरवी गुटिका" रख दे, फिर तेल का दीपक लगा ले और हकीक माला से निम्न मन्त्र की ग्यारह मालाएं फेरे —

मन्त्र

ॐ नमो धार अधर धार बांधू, अमुक बैरी की जिह्वा बांधू, दिमाग बांधू सारा शरीर बांधू, मती भ्रष्ट करूं थर थर कांपे आकर पांव पड़े जो न ऐसो होय तो भैरव खण्डे की धार से काटे, शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस प्रकार तीन दिन तक ऐसा प्रयोग करे, चौथे दिन वह 'भैरव भैरवी गुटिका' शत्रु के घर में काले कपडे में बांध कर डाल दे तो उसी क्षण से शत्रु की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और कुछ ही दिनों में आकर समझौता कर लेता है या मुकदमा समाप्त कर लेता है, इस प्रयोग से मुकदमें में तो सफलता मिलती ही है।

विजय प्रयोग

अमावस्या की रात्रि को काली धोती पहिन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने सात गोमतीचक्र रख दे और उन पर कुंकुम की बिंदिया लगावे फिर हकीक माला से ग्यारह माला मन्त्र जप करे ।

मन्त्र

ॐ वीर बैताल धरनी कांपे गगन गरजे मेरे शत्रु "अमुक" को नाश करे मेरे मन को शूल दूर करे "अमुक" कार्य में सफलता दे जो न दे तो रुद्र को त्रिशूल खावे ।

ग्यारह माला मन्त्र जप होने के बाद वे सातों गोमती चक्र घर के बाहर जमीन में गाड़ दे तो निश्चय ही उसे इच्छित कार्य में सफलता प्राप्त होती हैं ।

इस मन्त्र में पहले 'अमुक' के स्थान पर शत्रु का नाम ले और दूसरे 'अमुक' के स्थान पर उस कार्य का उल्लेख करे जो कार्य जल्दी से जल्दी सम्पन्न करना चाहते हैं ।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है, गोमती चक्र पूर्ण शत्रुस्तम्भन मन्त्र से मन्त्र सिद्ध हो, मन्त्र जप में हकीक माला का ही प्रयोग हो ।

शत्रु को पागल करने का प्रयोग

इसे भैरव की चौकी भी कहते हैं, मंगलवार के दिन किसी सुनसान स्थान की तरफ जाकर लोहे की कील से घेरा खींच कर उसमें बैठ जाय और सामने गेंडे का छल्ला रख दे फिर मूंगे की माला से निम्न मन्त्र की पांच मालाएं फेरें ।

मन्त्र

ॐ भूतेश्वर वं वं अमुक शत्रु को पागल करे दिमाग तोड़े कपड़े फाड़े जंजीरों से बंधा रहे ऐसा न करे तो खोपड़ी में प्रसाद दे भैरव बाबा मसान की दुहाई

यह तीन दिन का प्रयोग है, चौथे दिन वह गेंडे का छल्ला शत्रु के घर में फेंक दे तो शत्रु उसी दिन से पागल हो जाता है और इतना अधिक पागलपन करने लगता है कि उसे जंजीर से बांध कर रखना पड़ता है ।

इसमें जो गेंडे का छल्ला प्रयोग किया जाय वह मारण मन्त्र से सिद्ध हो, सामान्य गेंडे के छल्ले से लाभ नहीं होगा 'अमुक' के स्थान पर शत्रु का नाम ले ।

अमावस्या के दिन घर के एकांत कक्ष में काला धागा।

शत्रु वशीकरण प्रयोग

यह प्रयोग महत्वपूर्ण है और इससे शत्रु वश में हो जाता है फिर जैसा कहा जाता है वैसा ही वह करता है।

रविवार के दिन 'नाग मुष्टिका' लाकर काले कपड़े में बांध कर अपने सामने रख दे और तेल का दीपक लगा ले, फिर काली धोती पहन कर काले आसन पर बैठकर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर हकीक माला से निम्न मन्त्र की ११ माला जप करे।

मन्त्र

ॐ आं धुं धुं ठः ठः हुं हुं ॐ

इस प्रकार यह पांच दिन प्रयोग करे छठे दिन पोटली में बंधी हुई 'नाग मुष्टिका' शत्रु के घर में या उसकी दुकान पर डाल दे तो शत्रु का मन बदल जाता है और वह पूरी तरह से वश में हो जाता है।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है और शीघ्र सिद्धिप्रद है।

पर बैठ जाय और सामने 'सर्प गुटिका' तथा 'बिल्ली की   खाली नहीं आता।



पुत्र प्रदायक प्रयोग

साफ भोजपत्र लेकर उसके ऊपर केशर से बालक का चित्र बनावे और सामने बैठकर पुत्र की इच्छा रखने वाली मां स्फटिक माला से निम्न मन्त्र का जप करे, नित्य पांच माला जप होना अनिवार्य है, इस प्रकार ग्यारह दिन तक करे, यह प्रयोग शुक्लपक्ष की पूर्णिमा से प्रारम्भ करना चाहिए।

मन्त्र

ॐ हरिवंश श्री कृष्ण देवकी सुत वासुदेव जगतपति देहि मे तनयं नमः

भोजपत्र के सामने 'पुत्र प्रदायक यन्त्र' रख दे, जब ग्यारह दिन का प्रयोग समाप्त हो तब भोजपत्र काच की फ्रेम में टांग दे और पुत्र प्रदायक यन्त्र गले में पहन ले तो निश्चय ही बांझ स्त्री को सन्तान प्राप्ति होती है और उसकी मन की मुराद पूरी हो जाती हैं।

बाल रोग निवारक प्रयोग

यदि बालक को पीडा होती हो या बराबर बीमार बना रहता हो अथवा रह रह कर डरता हो तो यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूरण है ।

क्लौं

रविवार के दिन भोजपत्र अथवा कागज पर केशर से यह यन्त्र बनादे और उसके ऊपर 'रूद्र गुटिका' रख दे फिर भोजपत्र में वह गुटिका समेट कर कच्चे रेशमी धागे से सात अथवा नौ आंटे देकर मादलिये (तावीज) में रख गले मे या हाथ में बांधने से वाल भय समाप्त हो जाता है और उस पर किसी भी प्रकार की पीड़ा भूत प्र त नजर टोना टोटका होता है तो दूर हो जाता है और बालक स्व-स्थ बना रहता है ।

यह प्रयोग महत्वपूर्ण है और आजमाया हुआ है ।

हुए गुलाब के फूल अदृश्य हो जाय तो समझना चाहिए कि साधना में सिद्धि मिल गई है, साधना में गंधक के घेरे में बाकी चीजें तो ज्यों की त्यों रहेगी पर गुलाब के फूल नित्य ताजे लाकर रखने चाहिए।

बाईसवें दिन जब प्रयोग करना हो तो अदृश्य गुटिका को अपने मुंह में रख ले तो वह अदृश्य हो जायगा, वह तो अन्य लोगों को देख सकेगा परन्तु उसे कोई नहीं देख पायेगा जब वापिस प्रत्यक्ष होना हो तो उस अदृश्य गुटिका को कपड़े में ले लेने पर वह सब को दिखाई देने लग जाता है।

बनजारिन का यह प्रयोग इतना चमत्कारिक और प्रामाणिक है कि इतने वर्ष बीतने के बाद भी आज भी यह प्रयोग ज्यों का त्यों मैं उपयोग करता हूं, और मुझे सफलता मिलती है।

हजारों मील की यात्रा सैकण्डों में

यह सिद्धि भी मुझे उस बनजारिन से मिली थी, इसमें साधना सिद्ध होने पर व्यक्ति हवा की तरह हलका और अदृश्य हो जाता है, और कुछ ही सैकण्डों में हजारों मील दूर जहां भी वह चाहे पहुंच सकता है, तथा वापिस आ सकता है, इस प्रयोग में शरीर को कोई नुकसान नहीं होता और सारा शरीर हवा की तरह हलका होकर उड़ने लग जाता है।

विधि —

यह प्रयोग शुक्रवार की रात से शुरू होता है, घर के कमरे में पश्चिम की ओर मुंह कर बैठ जाय, नीचे मृग चर्म बिछा हो और एक मृग चर्म वह खुद लपेट ले, इसके अलावा शरीर पर अन्य कोई वस्त्र न हो, फिर सामने गुलाब के तेल का दीपक लगा ले और लोबान धूप या लोबान की अगरबत्ती जलावे, यह न मिले तो चन्दन की अगरबत्ती भी लगा सकते हैं।

फिर काली मिर्च का पाउडर बनाकर उससे अपने सामने जमीन पर एक गोल घेरा बनावे और उसमें शून्य गुटिका, सुलेमान यन्त्र, आठ गुलाब के फूल, आठ काली मिर्च के दाने, आठ लौंग, आठ हकीक तथा आठ लघु

व्यवसाय वर्द्धक चौबीसा यन्त्र

बुधवार के दिन इस यन्त्र को व्यापार का मालिक खुद भोजपत्र पर केशर से बनावे और उस पर "लक्ष्मी गुटिका" रख दे। फिर इसे व्यवसाय की राकड़ रहती हो या सम्पत्ति रखने का स्थान हो वहां पर रख दे।

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६

ऐसा करने पर व्यापार दिन दूना रात-चौगुना बढ़ता रहता है, यह सिद्ध प्रयोग है और सैकड़ो लोगों ने आजमाया है।

नारियल रख दे ।

फिर सामने बैठकर विद्युत माला से इक्कीस माला मन्त्र जप करे, यह प्रयोग इक्कीस दिन करे तब तक उस कमरे में साधक के अलावा और कोई नहीं जावे दिन को ताला लगाये रखे और रात को मन्त्र जप करते समय दरवाजा थोड़ा सा खुला रखे ।

मन्त्र

बिसमिल्लाहिर्रहीम लाइल्लालिल्लाह मुहम्मद रसूलिल्ला मुसलमानी अबादानी मरो न खाय परी न छोडे वे बहिश्त को जाय । चौकी पै चौकी चली अम्बर हुआ तरवर तारा मीना सा मर्द गढ़ तोड़ा आकाश तोड़ा नदी बांध समुद्र पाताल तोड़ा मनचिन्ते जगे पे जाय बिस्मिलाह कारज करे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरोमन्त्र ईश्वरो वाचा छू मन्तर

इक्कीस दिन के बाद जब सामने के घेरे में से गुलाब के फूल गायब हो जाय तो समझ लेना चाहिए कि सिद्धि प्राप्त हो गई है, इसके बाद जब भी शून्य गुटिका मुंह में रखेगा तो उसका शरीर हवा की तरह हल्का हो जायगा और उड़ने लग जायगा फिर धीरे-धीरे जहां चाहे वहां नीचे उतर जाय और शून्य गुटिका को मुंह से बाहर निकाल ले तो जैसा शरीर है, वैसा हो जायगा, मगर हजारों मील की यात्रा कुछ ही सैकण्डों में हो जायगी ।

इस प्रयोग में घेरे में नित्य ताजे गुलाब के फूल रखने चाहिए और सिद्धि प्राप्त होने पर इसकी चर्चा किसी से नहीं करनी चाहिए ।

वस्तुतः यों तो बनजारिन ने सैकड़ों प्रयोग मुझे बताये थे, जो कि एक से एक बढ़कर है, परन्तु मैंने कुछ प्रयोग पाठकों के सामने रखे हैं, जो कि अपने आप में महत्वपूर्ण और सिद्ध है ।



शत्रु का व्यापार चौपट करने का प्रयोग

यह ग्यारह दिन का प्रयोग है, मंगलवार की रात से इस प्रयोग को प्रारम्भ करना चाहिए, मंगलवार की रात दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर काले आसन पर काली धोती पहन कर बैठ जाय, सामने तेल का दीपक लगा ले और सात मूंगा रत्न रख दे, ये "रत्न व्यापार बन्ध" प्रयोग से सिद्ध हो, फिर इन सातों मूंगा रत्नों पर सिन्दूर का तिलक करे तथा हकीक माला से तीन माला मन्त्र जप करे ।

मन्त्र

ॐ नमः काल रूपाय शत्रु व्यापार भस्मी कुरु कुरु फट् ।

ग्यारह दिन के बाद वे मूंगे के टुकडे लाल कपडे में बांध कर शत्रु की दुकान में या दुकान के सामने डाल दे तो निश्चय ही शत्रु का व्यापार बरबाद हो जाता है और धीरे धीरे वह दिवालिया हो जाता है ।

चेहरे के और शरीर के दाग दूर करने का प्रयोग

शरीर सुन्दर हो, चेहरा आकर्षक हो पर यदि किसी प्रकार के घाव का निशान, मस्सा, दाग, दाद, और अन्य कोई चिन्ह हो तो उससे चेहरे की सुन्दरता मारी जाती है, इसके लिये साबर में एक विशेष प्रयोग दिया हुआ है जो कि अपने आप में अद्भुत है।

यह प्रयोग सोमवार से प्रारम्भ करना चाहिए और तीस दिनों का प्रयोग है प्रातः उठकर सिर के बाल धो ले और स्नान कर आसन पर बैठ जाय, सामने पारद का विशेष मन्त्र सिद्ध शिवलिंग किसी पात्र में स्थापित कर दे और उस पर धीरे धीरे जल चढ़ाते समय निम्न मन्त्र बराबर उच्चारण करे।

ॐ नमो शिवाय गौरी पति कामरूप दायक मेरे शरीर को भी रति समान करे, फालतू दाग दूर करे गौरी के समान सुन्दर बने जो न करे तो सती गौरी की दुहाई।

मन्त्र पढ़ते समय शिवलिंग पर पानी की धार पतली पतली चढ़ाती रहे, लगभग पन्द्रह मिनट तक ऐसा करे, और फिर शिवलिंग को बाहर निकाल कर उस पर चढ़ाये हुए जल में से कुछ जल उन दागों पर लगा ले और बाकी जल पी ले।

इस प्रकार तीस दिन करे तो व्यर्थ के दाग और दाद आदि अशोभनीय चिन्ह समाप्त हो जाते हैं।

लम्बे काले और घने आकर्षक बालों की प्राप्ति का शर्तिया प्रयोग

यह प्रयोग मुझे साबर मन्त्रों के ज्ञाता एक बनजारिन ने बताया था, उसके बाल अत्यधिक घने काले और ऐड़ियों को छूते हुए थे, इस प्रयोग से बालों का झड़ना बन्द हो जाता है, साथ ही साथ यदि बालों में सफेदी आ रही हो तो वह दूर हो जाती है, वास्तव में ही यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है

यह प्रयोग वह बालिका स्वयं करे जो इस प्रकार के बाल चाहती है, एक पात्र में जल ले लें और उसमें 'पुष्पधन्वा जड़ी' का पाउडर मिला ले। फिर सामने एक अलग पात्र में 'गौरी गुटिका' रख कर उस पर निम्न मन्त्र पढ़ती हुई जल चढ़ाये। लगभग एक या दो बाल्टी पानी इस गौरी गुटिका पर चढ़ा देना चाहिए। पाउडर एक या दो तोला मिलाना चाहिए। लगभग आधे घण्टे तक गौरी गुटिका पर जल चढ़ाते हुए निम्न मन्त्र पढ़े।

मन्त्र

ॐ गौरी अगनी भैरवी योगनी सहारे वपु सहारे मेरे केस सुन्दर करे, लम्बे करे घने और दिप् दिप् करे जो न करे तो राजा रामचन्द्र की दुहाई। रूद्र को त्रिशूल खावे योगिनी की दुहाई।

फिर उस जल से अपने बालों को धो ले इस प्रकार २१ दिन करे तो बालों का झड़ना बन्द हो जाता है तथा उसके बाल अत्यधिक चमकीले आकर्षक, घने और झरने के समान पीठ पर लहराते हुए से होने लगते हैं।

कद बढ़ाने का विश्वसनीय प्रयोग

यदि आप सुन्दर और आकर्षक हैं पर यदि आपका कद छोटा है तो सारी सुन्दरता व्यर्थ हो जाती है। छरहरा शरीर लम्बा कद पुरुषों को पागल बना देने के लिये पर्याप्त है, इस प्रयोग से कद लम्बा होता है, मुझे यह प्रयोग एक श्रेष्ठ योगिनी से प्राप्त हुआ था और इसे मैंने कई बार आजमाया है।

किसी शुक्रवार के दिन स्नान कर गुलाबी रंग की साड़ी पहन कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर गुलाबी आसन पर बैठ जाय सामने किसी पात्र में स्वस्तिक का चिन्ह कुंकुम से बनाकर उस पर २१ लघु नारियल रख दे और इन सब पर कुंकुम का तिलक करे तथा स्फटिक माला से मन्त्र का जप करे—

या ख्वाजः खिजर मेहर मेहर लाजवाल तू लाजवाल

नित्य ११ माला जप होना चाहिए। इस प्रकार चालीस दिन तक करे। पहले दिन ग्यारहवें दिन इक्कीसवें दिन तथा इकतीसवें दिन लघुनारियल बदल ले अर्थात् पहले दिन जो लघु नारियल रखें थे, उनकी दस दिन पूजा हो और ग्यारहवें दिन वे नारियल अन्य पात्र में रख दे और नये नारियल स्थापित कर दे। इस प्रकार चार बार नारियल बदलता रहे। फिर सब नारियल प्रयोग पूरा होने के बाद पीस कर पाउडर बना दे और उसकी अस्सी पुड़िया बना दे; एक पुड़िया सुबह तथा एक पुड़िया शाम पानी के साथ सेवन करे तो वे पुड़ियाएं समाप्त होते होते मनोवांछित कद बढ़ जाता है और उसके रूप में अद्वितीय निखार आ जाता है।

ये लघु नारियल अंगूठे के आकार के मन्त्र सिद्ध होते हैं।

३– मर्दों को पागल बना देने वाला चेहरा प्राप्ति के लिए कमल संज्ञक प्रयोग

जैसा मैंने पीछे बताया है, कि यदि रंग गोरा और वह बालिका लम्बी छरहरी हो फिर भी यदि चेहरे पर आकर्षण नहीं हो या छोटी-छोटी असुन्दर आंखें हों, होंठ खिंचे हुए रसहीन सूखे निर्जीव से हों तो सारा सौन्दर्य धरा का धरा रह जाता है, सारे शरीर का प्रधान भाग चेहरा ही होता है, और चेहरे में भी आंखों का महत्व सबसे ज्यादा है, क्योंकि व्यक्ति की पहली नजर उसकी आंखों पर ही पड़ती है, इसलिए सौन्दर्य विशेषज्ञों ने कहा है, कि 'बोलती हुई आंखें' हों, होंठ मदभरे और निमन्त्रण देने वाले से प्रतीत होते हों, यह प्रयोग ऐसा ही है।

इस प्रयोग को किसी शुक्रवार से प्रारम्भ किया जा सकता है, प्रातः स्नान कर गुलाबी साड़ी पहन कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, नीचे गुलाबी आसन हो, सामने एक पात्र में या प्लेट में केशर से निम्न यन्त्र बनावे, 'खुद के नाम' के स्थान पर स्वयं का नाम लिखे।

शरीर की फालतू चरबी हटाने का प्रयोग

शरीर में जहां पर भी फालतू चरबी या थुलथुलापन होगा वह बेडौल और अशोभनीय ही होगा, ऐसा थुलथुलापन होठों में, गालों में, चेहरे में वक्ष स्थल पर कूल्हों में हाथ पैरों में पेट में या कमर में कहीं पर भी हो सकता है, इससे सारा सौन्दर्य मारा जाता है और धीरे धीरे शरीर बेडौल-हो जाता है।

इसके लिये एक अत्यधिक उत्तम प्रयोग साबर साधनाओं में है जिसे मैं पहली बार स्पष्ट कर रहा हूं।

शुक्रवार के दिन गुलाबी रंग की साड़ी पहिन कर गुलाबी आसन पर बैठकर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने किसी पात्र में 'नागमुष्टिका यन्त्र' स्थापित कर दे और उस पर केशर लगावे फिर 'सौन्दर्य-माला' से निम्न मन्त्र का जप करे, सौन्दर्य माला विशेष मन्त्रों से सिद्ध होती है।

मन्त्र

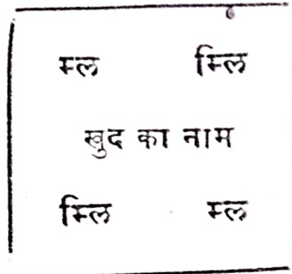
ॐ ॐ ॐ अनन्त मुखी स्वाहा।

यह प्रयोग २१ दिन का है, इसके भोजन का भी विशेष विधान है, पहले दिन केवल एक कौर भोजन करे, दूसरे दिन दो कौर इसी प्रकार ग्यारहवें दिन ग्यारह कौर भोजन करे फिर बारहवें दिन घटते हुए दस कौर, नौ कौर भोजन कर २१ वें दिन निराहार रहे।

नागमुष्टिका यन्त्र पर आधे घण्टे तक उपरोक्त मन्त्र पढ़ते हुए जल चढ़ावे और मन्त्र जप के बाद उस जल में से एक गिलास भर जल पी ले।

वस्तुतः यह प्रयोग अद्भुत है और चाहे शरीर में कितनी भी फालतू चरबी हो, तो भी इस प्रयोग से समाप्त हो जाती है, कौर का तात्पर्य भोजन करते समय एक बार में जो मुंह में डालते हैं उतने खाद्य पदार्थ को एक कौर कहते हैं।

यन्त्र



फिर इस यन्त्र के सामने 'मदकुंभ यन्त्र' रख दे और केशर से उसका पूजन करे, तथा स्फटिक माला से नित्य ११ माला मन्त्र जप करे।

मन्त्र

ॐ नमो कामदेव की दुलारी संसार की प्यारी सुन्दरता की रानी तेरे होठ रसीले आंखें कटोला चेहरे पर देवता मोहित हों मेरा भी कारज ऐसो ही करे जो न करे तो कामदेव पर शिव को त्रिशूल पडे।

सर्वकामना सिद्धि प्रयोग

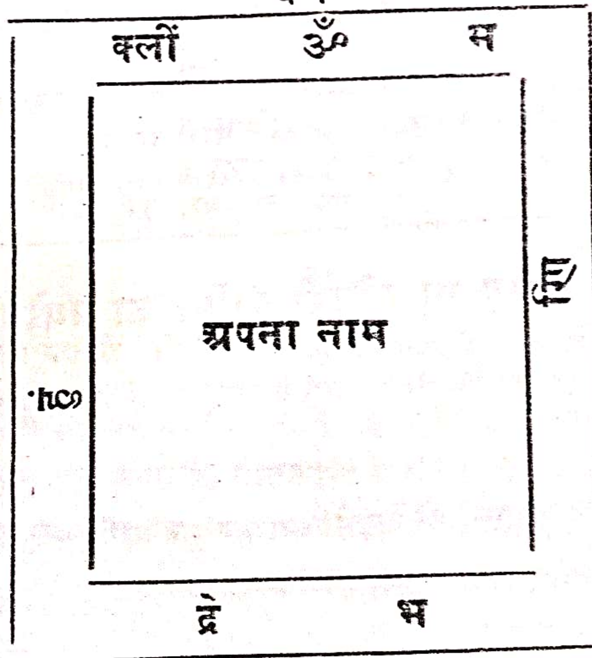
रविवार के दिन प्रातः स्नान कर भोजपत्र पर निम्न यन्त्र बना ले और बीच में अपना नाम लिख ले फिर इसके ऊपर हाथी के नाखून का टुकड़ा रख दे और मूंगे की माला से पांच माला मन्त्र जप करे।

मन्त्र

ॐ नमः मणिभद्रे हुं।

मन्त्र जप के बाद वह हाथी का नाखून भोजपत्र में लपेटकर चांदी के ताबीज में भरकर बांह पर बांध दे तो उसकी समस्त मनोकामना पूरी होती है, और जहां भी जाता है, उसे सफलता मिलती है।

यन्त्र



वस्तुतः यह प्रयोग आश्चर्यजनक सिद्धिदायक है, और एक दिन का प्रयोग है

ग्यारह माला मन्त्र जप के बाद थोड़ा सा पानी उस सामने वाले पात्र पर डाल दे और 'मदकुंभ यंत्र' उठाकर उस केशर से अंकित यन्त्र को पानी में घोल दे और वह पानी पी ले, इस प्रकार ग्यारह दिन करे, ग्यारह दिन के बाद वह मदकुंभ यन्त्र गले में धागे में पिरोकर पहन ले तो उसका प्रयोग सफल होता है, और उसका चेहरा भोलापन लिए हुए अत्यधिक आकर्षक और सुन्दर बन जाता है।

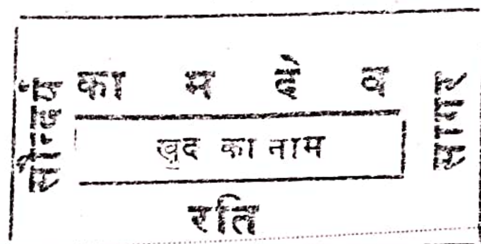
४– सागर की तरह उमड़ता हुआ वक्ष स्थल प्राप्ति के लिए सागर प्रयोग

युवती के शरीर का सबसे ज्यादा प्रभाव यौवन दीप्त कामोत्तेजक वक्ष स्थल का ही पड़ता है, यदि शरीर में बाकी सौन्दर्य के सभी गुण हो परन्तु पुष्ट और आकर्षक वक्ष स्थल नहीं हो तो सारा सौन्दर्य धरा का धरा रह जाता है, इसके लिए अन्य उपकरण लगा देने से स्वाभाविकता नहीं आती।

एक योगी से मुझे इस सम्बन्ध में अद्वितीय प्रयोग हाथ लगा था, जिसको सैकड़ों जगह आजमाया है, और हर बार यह प्रयोग कसौटी पर खरा उतरा है, इस प्रयोग से जहां छोटे और दुर्लभ वक्ष स्थल पुष्ट और आकर्षक बन जाते हैं, वहीं यदि वक्ष पर जरूरत से ज्यादा मांस हो तो वह दूर हो जाता है, यदि उनमें ढीलापन अथवा अनाकर्षकता आ गई हो तो वह भी दूर होकर सुन्दर सुडौल आकर्षक बन जाते हैं, वास्तव में ही इस प्रयोग की जितनी तारीफ की जाय उतनी कम है।

यह प्रयोग शुक्रवार से प्रारम्भ किया जाना चाहिए, सुबह स्नान कर बालों को धोकर फैला दे और फिर गुलाबी रंग के आसन पर गुलाबी साड़ी पहन कर बैठ जाय सामने भोजपत्र पर केशर से निम्न 'सागर यंत्र' बनाये

यन्त्र



फिर इस यन्त्र को किसी पात्र में रख दे, और सामने 'कामोदीप्त गुटिका' स्थापित कर दे, उस गुटिका पर भी काफी केशर लगावे और फिर सौन्दर्य माला से निम्न मन्त्र की पांच माला मन्त्र जप करे, सौन्दर्य माला में प्रत्येक मनका विशेष मन्त्र से सिद्ध होता है, दिन भर वह माला गले में पहने रहे, यह ग्यारह दिन का प्रयोग है, और ऐसा नित्य किया जाना चाहिए।

मन्त्र जप समाप्ति के बाद पात्र में ही भोजपत्र पर पानी डालकर उस भोजपत्र को धो ले और वह पानी पी ले तथा कामोदीप्त गुटिका पर जो केशर लगाई हुई है

आकस्मिक धन प्राप्ति या लौटरी प्राप्ति का प्रयोग

एकाक्षी नारियल जो कि लक्ष्मी मन्त्र से आपूरित हो उस पर चांदी का बरक लगावे और केशर से निम्न मन्त्र लिखे।

मन्त्र

ॐ श्रीं क्लीं श्रीं देवत्यै नमः कुरु कुरु ऋद्धि वृद्धि स्वाहा।

फिर स्फटिक माला से पांच माला मन्त्र जप करे और दूसरे किसी नारियल को तोड़कर उसकी गिरी से ही १०८ आहुतियां दे, फिर उस एकाक्षी नारियल को भण्डार की पेटी में रखे तो निश्चय ही धन प्राप्ति होती है, और लौटरी प्राप्त होने का योग बनता है।

उसे भिगोकर दोनों हाथों से दोनों स्तनों पर मल ले।

साधना काल में दूध का सेवन ज्यादा करे, यदि ऐसा प्रयोग किया जाय तो निश्चय ही उसे अद्वितीय सफलता प्राप्त होती है, ऐसा प्रयोग हर तीसरे वर्ष करना चाहिए, ग्यारह दिन का प्रयोग समाप्त होने पर वह कामोदीप्त गुटिका जड़वाकर गले में पहन लेनी चाहिए।

वस्तुतः यह प्रयोग अद्वितीय और निश्चित प्रभाव युक्त है।

मन्त्र

ॐ नमो नमो आदेश को गुरु रति को उर्वशी को रम्भा को,मेनका को सातों सुन्दरता को सातों यौवन को मेरे शरीर में अनंग बैठे गजकुंभ करे जो न करे तो प्राण प्यारी रति को मरी देखे।

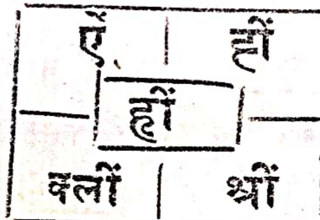
५- पतली कमर और भारी नितम्ब के लिए

पुष्ट और भारी नितम्ब हमेशा से पुरुषों के आकर्षण का केन्द्र रहे हैं, पर साथ ही साथ कमर पतली और मुट्ठी में आने लायक हो।

इसके लिए शुक्रवार से निम्न प्रयोग सम्पन्न करे, सामने किसी बर्तन में केशर से निम्न यन्त्र बना ले।

गड़ा हुआ धन प्राप्त होने का प्रयोग

यदि घर में धन गड़ा हुआ हो और उसका पता नहीं चल रहा हो तो यह प्रयोग महत्त्वपूर्ण है, रविवार के दिन प्रातः स्नान कर भोजपत्र पर इस यन्त्र को बना ले और इसके मध्य में मूंगा रत्न गोंद से चिपका ले।



फिर स्फटिक माला से २१ माला मन्त्र जप करे।

मन्त्र

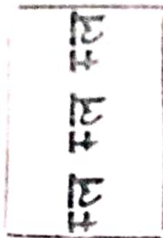
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एकाक्षर भगवते विश्व रूपाय सर्व योगेश्वराय त्रैलोक्यनाथाय सर्व काम प्रदाय नमः।

फिर रात्रि को सोते समय तकिये के नीचे वह माला और यन्त्र रख दे तो स्वप्न में उसे गड़े हुए धन के स्थान का पता चल जाता है, और स्वप्न में संकेत भी मिल जाता है कि इस स्थान को कितना खोदने पर किस प्रकार से वह धन प्राप्त किया जा सकता है।

मूंगा रत्न लक्ष्मी प्रदायक मन्त्र से सिद्ध हो।

वस्तुतः यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और इससे निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है।

यन्त्र



फिर स्फटिक माला से निम्न मन्त्र का तीन माला मन्त्र जप करे ।

मन्त्र

ॐ परी परी आकाश में उड़े धरती की खदर रखे कामदेव को मोहित करे ऐसा ही रूप मुझे दे जो न दे तो रुद्र का कोप पड़े अनंग की आरण रति की सौगन्ध ।

फिर उस पात्र में पानी डालकर यन्त्र मिटा दे और पानी पी ले, इस प्रकार ग्यारह दिन तक करे तो निश्चय ही उसे मनोवांछित फल प्राप्त हो जाता है ।

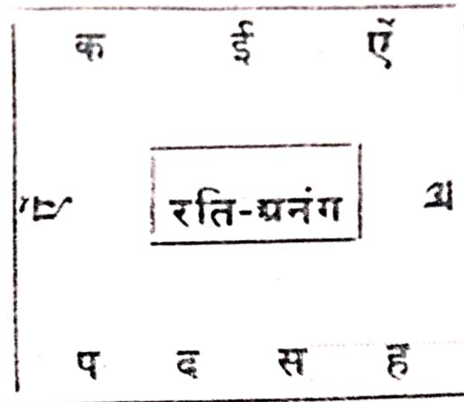
६— पूरा शरीर सांचे में ढ़ला हुआ सा होने का रति राज प्रयोग

यह प्रयोग सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण और करने योग्य है, इससे पूरा शरीर एक अजीब से आकर्षण से युक्त हो जाता है, पूरा शरीर एक आनुपातिक सांचे में ढ़ल जाता है, दक्ष स्थल का सौन्दर्य बढ़ जाता हैं, उसकी चाल में अल्हड़पन और आंखों में सरूर पैदा हो जाता है, उसको देखकर कठोर से कठोर हृदय वाला व्यक्ति भी पानी पानी हो जाता है ।

यह प्रयोग मैंने सैकड़ों बार आजमाया हैं, और इसको मैंने प्रामाणिकता के साथ सफल होते देखा है, इससे बाल लम्बे, काले और घने हो जाते हैं ।

शुक्रवार को प्रातः स्नान कर गुलाबी रंग की साड़ी पहन कर गुलाबी आसन पर बैठ जाय और सामने भोज पत्र पर केशर से निम्न यन्त्र को अंकित कर ले, यह अंकन चांदी की सलाका से होना चाहिए ।

यन्त्र



फिर यन्त्र के सामने दो 'रति गुटिकाएं' तथा दो 'कामदेव गुटिका' रख दे, उनका पूजन करे, केशर लगावे तथा "सौन्दर्य माला" से निम्न माला मन्त्र जप करे,

मन्त्र

नमो नमो अनंग को रति को बावन परियों को चौसठ गधर्वो को सुलेमान शाह को कह्यो करे मेरे पिण्ड में वास करे और ऐसो रूप यौवन दे कि दुनियां पागल बने जो न करे तो शिव को त्रिशूल हनुमान की गदा इन्द्र को वज्र निरधार पड़े ।

यह २१ दिन का प्रयोग है, एक समय भोजन करे, और कानों में इत्र लगावे प्रयोग पूरा होने पर थाली में रखे दोनों रतिराज गुटिकाएं तथा कामदेव गुटिकाएं कमर पर बांध दे तो उसका सौन्दर्य हजार गुना बढ़ जाता है उसकी गणना श्रेष्ठतम सुन्दरियों में होने लग जाती है, ये गुटिकाएं मन्त्र सिद्ध होनी चाहिए ।

वस्तुतः साबर मन्त्र और प्रयोग अद्वितीय हैं और ये सारे प्रयोग आज तक गोपनीय रहे हैं, पूज्य गुरुदेव का मैं शिष्य हूँ और इस बात का मुझे फक्र है, उनके आदेश से ही मैंने इन गुप्त प्रयोगों को पाठकों के लिये प्रस्तुत किया है ।



बीमारियां आपकी : चिकित्सा साबर की

मानव का पहला कर्त्तव्य होता है कि वह अपने शरीर को स्वस्थ और तन्दुरस्त रखे, उसका सारा प्रयत्न यही होता है। यदि तबियत ठीक है, तो उसे खान-पान रहन-सहन, मौज-शौक सब अच्छे लगते हैं,परन्तु बीमारी होने पर चाहे उसके पास करोड़ों रुपये हों तब भी बेकार हो जाते हैं, और उसका आनन्द वह नहीं उठा सकता।

आयुर्वेद के माध्यम से तो असाध्य बीमारियों की चिकित्सा होती ही है, परन्तु इस क्षेत्र में साबर साधनाओं के माध्यम से भी बीमारियां दूर हो जाती है, और व्यक्ति पूर्णत: स्वस्थ हो जाता है।

मैं अपने क्षेत्र का प्रसिद्ध वैद्य रहा हूँ, सन्यासी तो बाद में बना, परन्तु मेरा सारा जीवन लोगों के रोग, दु:ख दूर करने और उन्हें निरोग करने में ही व्यतीत हुआ है, मैंने यह अनुभव किया है, कि जो बीमारियां आयुर्वेद के माध्यम से ठीक नहीं हो सकती वे भी साबर मन्त्रों के माध्यम से ठीक हो जाती है, और इसका फल तुरन्त प्राप्त होता है, भारतीय ही नहीं अपितु विदेशी डाक्टर भी साबर मन्त्रों के ऐसे अलौकिक प्रभाव को देखकर दंग रह गये हैं, और वे भी अब अपनी चिकित्सा में साबर मन्त्रों का प्रयोग करने लगे हैं।

आगे के पृष्ठों में मैं कुछ विशेष बीमारियां और उनसे सम्बन्धित साबर प्रयोग दे रहा हूँ, जो कि परीक्षित हैं, प्रामाणिक है, और शीघ्र निरोग करने की सामर्थ्य रखते हैं।

उदर रोग

कई कारणों से उदर रोग हो जाते हैं, थोड़े बहुत रूप में बराबर दर्द बना ही रहता है, पेट में जलन भोजन न पचना, रह रह कर दर्द उठना पेट में शूल होना, किसी विशेष भाग पर पेट में दर्द बना रहना, आंखों में तकलीफ होना, आंतों में घाव हो जाना, अतिसार आदि रोगों के लिए यह प्रयोग श्रेष्ठतम है, और इस प्रयोग से निश्चित ही रोगी को लाभ होता है।

किसी रविवार के दिन रोगी स्वयं या कोई व्यक्ति स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने तेल का दीपक लगावे, फिर ताम्बे के पात्र में 'रोग मुक्ति यन्त्र' रख दे, जो कि मन्त्र सिद्ध हो और उस पर केशर का तिलक करे, तथा हाथ में जल लेकर कहे कि मैं अमुक व्यक्ति के अमुक रोग को दूर करने के लिए यह साबर प्रयोग कर रहा हूं।

फिर हकीक माला से निम्न मन्त्र का जप तीन माला करे।

मन्त्र

ॐ मुं मुकटेश्वरी देवी आवे उदर रोग मिटावे अमुक को ठीक करे जो न करे तो महावीर की दुहाई शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

उस यन्त्र पर जो जल चढ़ाया जाय उसमें से तीन

चम्मच रोगी को पिला दे, और बाकी जल में कपड़ा भिगोकर रोगी के पेट पर फेर दे, इस प्रकार ग्यारह दिन तक करे।

ग्यारह दिन के बाद वह यन्त्र धागे में पिरोकर रोगी के कमर में बांध दे तो निश्चय ही रोगी किसी भी प्रकार के उदर रोग से मुक्त हो जाता है, और पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करता है।

२- चर्म रोग और रक्त रोग

यदि किसी भी प्रकार का चर्म रोग हो, त्वचा पर सफेद या लाल दाग बनने लग गये हों, चमड़ी पर चकत्ती होने लग गई हो या त्वचा बदरंग हो रही हो, अथवा शरीर पर दाद, खाज, खुजली आदि हो या शरीर में रक्त की न्यूनता हो यह प्रयोग तुरन्त सिद्धिदायक है, और इससे निश्चित रूप से पूर्ण चर्म रोग मिट जाते है।

शुक्रवार के दिन नौ पीपल के पत्ते लाकर एक थाली में सजा दे और प्रत्येक पीपल के पत्ते पर नर्मदेश्वर शिवलिंग रख दे,जो मन्त्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त हों पात्र के बाहर नौ दिये लगा ले और फिर रुद्राक्ष माला से निम्न मन्त्र की तीन माला मन्त्र जप रोगी या कोई व्यक्ति करे।

मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को त्रिलोचन देवी को अंजनी को महासाबरी को अमुक रोगी को ठीक करे चर्म रोग मिटावे रक्त शुद्ध करे जो न करे तो भगवती चिन्तामणि को त्रिशूल खावे।

प्रत्येक माला की मन्त्र जप समाप्ति पर नौ नर्मदेश्वर पर जल चढ़ावे, जब तीन माला मन्त्र जप हो जाय तो पीपल के पत्ते तथा नर्मदेश्वर पात्र से अलग रख दे, तथा उस जल में से कुछ तो रोगी को पिला दे, और कुछ उसके सारे शरीर पर लगा दे, ऐसा नौ दिन करे, पीपल के पत्ते रोज बदलने आवश्यक है।

प्रयोग समाप्ति के बाद नर्मदेश्वर घर के किसी शुद्ध स्थान पर स्थापित कर दे तो नौ दिन के भीतर-भीतर रोगी को स्वास्थ्य लाभ हो जाता है, और वह अनुकूलता अनुभव करता है।

यह प्रयोग परीक्षित है, और इससे रोगी को विशेष आराम प्राप्त होता हैं, मन्त्र जप समाप्ति के बाद वह रोगी रुद्राक्ष माला गले में धारण किये रहे।

३- पुरुष जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग

इसमें पुरुष का नामर्द होना जननेन्द्रिय में शिथिलता रहना, कामोत्तेजना न होना, जल्दी स्खलित हो जाना, स्तम्भन न रहना, वीर्य का पतला या दुर्गन्धपूर्ण होना, मूत्राशय में पथरी होना आदि जननेन्द्रिय से सम्बन्धित समस्त रोगों के लिए यह प्रयोग पूर्ण प्रभाव युक्त है।

किसी भी शुक्रवार के दिन स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने पांच गुलाब के पुष्प रख दे, प्रत्येक पर "कामदेव हेत्वा" स्थापित करे, उन पर केशर लगावे और पूजन करे, फिर स्फटिक माला से निम्न मन्त्र जप करे।

मन्त्र

ॐ नमो नमो पशुपतये कामदेवाय विहर विहर सर सर नृत्य नृत्य चल चल वल वल महलाय प्रवेशय प्रवेशय फट्।

इसमें नित्य तीन माला मन्त्र जप आवश्यक है, और प्रत्येक माला के बाद उन कामदेव हेत्वा पर जल चढ़ावे, मन्त्र जप के बाद उस जल में से कुछ भाग पी ले और कुछ भाग पुरुषेन्द्रिय पर लगा दे, इस प्रकार ग्यारह दिन प्रयोग करे, गुलाब के पुष्पों को किसी पवित्र स्थान पर डाल दे।

ग्यारह दिन प्रयोग करने के बाद वे पांचों कामदेव हेत्वा एक तावीज में भरकर कमर में बांध दे तो निश्चय

ही वह व्यक्ति सम्बन्धित बीमारियों से मुक्त हो जाता है, और काम कला में पूर्ण सक्षम होकर सफलता प्राप्त करता है, उसका आगे का जीवन पूरी तरह से आनन्द मय बन जाता है।

४— स्त्री रोग

स्त्रियों को कई प्रकार के रोग हो जाते हैं, जिनमें प्रदर, सफेद पानी आना, कमर में दर्द, सूतिका रोग, हिस्टीरिया, गर्भ स्थिर न रहना, रक्त प्रदर, शरीर में दर्द बना रहना, गर्भाशय में सूजन, गर्भाशय का मुंह संकीर्ण या बन्द होना आदि रोगों के लिये यह प्रयोग महत्वपूर्ण है।

शुक्रवार को स्त्री स्वयं स्नान कर अपने बाल धो ले और गुलाबी आसन पर गुलाबी साड़ी पहन कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने सात गुलाब के पुष्प रख दे और प्रत्येक गुलाब के पुष्प पर "रति गुटिका" स्थापित करे, इस प्रकार सात 'रति-गुटिकाएं' रखें, फिर उस पर केशर का तिलक करे, और हाथ में जल लेकर कहे कि मेरे शरीर के सभी रोग दूर हों।

फिर सामने अगरबत्ती व घी का दीपक लगाकर स्फटिक माला से निम्न मन्त्र की तीन माला मन्त्र जप करे।

मन्त्र

ॐ नमो कंदर्प सर विजलिनी सर्व रोग समन करी स्वाहा।

प्रत्येक माला के बाद उन 'रति गुटिकाओं' पर जल चढ़ावे, माला मन्त्र जप के बाद गुलाब के पुष्प की पंखुड़ियां खा ले और पानी पी ले, 'रति गुटिकाएं' अलग रखकर उस जल का कुछ भाग पी ले तथा कुछ भाग कमर के हिस्से पर लगा दे, इस प्रकार सात दिन करे।

आठवें दिन वे 'रति गुटिकाएं' किसी ताबीज में रख-कर वह ताबीज कमर में बांध दे तो समस्त प्रकार के स्त्री रोगों से छुटकारा मिल जाता है, और जब तक वह यन्त्र पहना हुआ होता है, तब तक ये रोग पुनः व्याप्त नहीं होते।

५— नेत्र रोग

आंखों का कमजोर होना, आंखें लाल रहना, आंखों में खुजली होना, आंखों की पुतली पर काला या सफेद धब्बा बनना, रतौंधी होना कम दिखाई पड़ना या किसी भी प्रकार की नेत्रों की बीमारी केलिए यह प्रयोग विशेष अनुकूल है।

किसी भी रविवार से यह प्रयोग प्रारम्भ किया जाना चाहिए, किसी चादी या स्टील के प्लेट में केशर से निम्न यन्त्र बनावे।

यन्त्र

०	०	०	०
०	०	०	०
०	०	०	०

फिर इस यन्त्र पर 'दिव्य यन्त्र' स्थापित कर दे और केशर से पूजन करे, फिर स्फटिक माला से निम्न मन्त्र जप करते समय घी का दीपक लगाया रखे, सफेद आसन पर सफेद धोती पहिन कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठे।

मन्त्र

ॐ नमो नमो दिव्याय मरकेतवे पुष्प धन्वे सकल सुरासुर नेत्राय सुख प्रदाय स्वाहा।

इस प्रकार नित्य तीन माला मन्त्र जप करे, प्रत्येक माला पूरी होने पर उस यन्त्र पर जल चढ़ावे, तीन माला पूरी होने पर वह दिव्य यन्त्र अलग कर दे और

प्लेट में जो केशर से यन्त्र बना है वह हाथ की अंगुली से पानी में घोल दे और वह पानी दोनों आंखों पर लगाये और फिर आंख पर पट्टी बांधकर दस मिनट के लिए सो जाय ।

इस प्रकार ग्यारह दिन तक करे, ग्यारहवें दिन के बाद वह 'दिव्य यन्त्र' तावीज में भरकर गले में धारण कर ले तो नेत्र रोग हमेशा के लिए मिट जाते हैं और उसकी आंखें बराबर स्वस्थ बनी रहती है ।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है और सिद्ध है ।

६- बाल रोग

बालकों को बचपन में कई प्रकार के रोग हो जाते हैं जिनमें सूखा रोग अर्थात् शरीर सूखता जाना, बालक के पेट में कीड़े पड़ जाना, शरीर में कमजोरी होना दुबलापन, पेट फूल जाना, हाथ पर कमजोर होना, और अन्य बाल रोगों से सम्बन्धित बीमारियों को दूर करने के लिए यह प्रयोग विशेष महत्वपूर्ण है और इसका प्रयोग अवश्य ही करना चाहिए ।

सोमवार के दिन बच्चे की मां या बच्चे का पिता पात्र में 'शिशु रोग निवारण' यन्त्र रख दे और उस पर एक गुलाब का पुष्प रख कर जल चढ़ाये फिर मूंगे की माला से निम्न मन्त्र की तीन माला मन्त्र जप करे, ।

मन्त्र

ॐ नमो भगवती वज्र श्रृंखले रोग भक्षतु स्वादतु सर्व उपद्रव रक्षतु नमः ।

इस प्रकार नित्य तीन माला जप करे, मन्त्र जप के बाद गुलाब का पुष्प बच्चे को खिला दे या पानी में घोल कर पिला दे, इस प्रकार तीन दिन करे, तीन दिन के बाद वह शिशु रोग निवारण यन्त्र काले धागे में पिरोकर बालक के गले में बांध दे तो निश्चय ही उस बालक के समस्त रोग दूर हो जाते हैं और वह पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करने लग जाता है ।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है और प्रत्येक मां को चाहिए कि ऐसा प्रयोग अपने बालक की शुभता के लिए सम्पन्न करे ।

७- खांसी और दमा

चाहे कितना ही पुराना दमा या खांसी हो, और ठीक नहीं हो रही हो तो यह प्रयोग उनके लिए संजीवनी की तरह है ।

रविवार के दिन से यह प्रयोग प्रारम्भ करे, उत्तर दिशा की ओर मुंह कर सफेद आसन पर बैठकर सामने किसी पात्र में नागरवेल का एक खाली पत्ता रख दे और उस पर फिटकरी का चुटकी भर पाउडर रख दे, फिर उस पर दक्षिणावर्ती शंख रख दे जो मात्र अंगूठे के आकार का हो और उसके सामने किसी भी माला से तीन माला मन्त्र जप करे ।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं जं जं कामेश्वरी बाण देवतै नमः

तीन माला मन्त्र जप के बाद वह शंख अलग रख दे और वह पान तथा उस पर जो फिटकरी का पाउडर रखा हुआ है वह रोगी मुंह में रख ले तथा उसकी लार निगलता रहे, बाहर नहीं थूके ।

यह नौ दिन का प्रयोग है, दसवें दिन वह दक्षिणावर्ती शंख लोहे के पात्र पर रखकर नीचे आंच देकर जला दे और उसकी राख को शीशी में भर-कर रख दे, फिर नित्य नागरवेल के पान पर दो चुटकी फिटकरी का पाउडर तथा एक चुटकी वह राख लेकर मुंह में रखे और उसकी लार निगले, तो कुछ ही दिनों में दमा रोग हमेशा के लिए मिट जाता है खांसी भी समाप्त हो जाती है ।



साबर साधना एवम् सिद्धियां

साबर साधनाएं कलियुग में शीघ्र निश्चित एवं पूर्ण प्रभावयुक्त है, इस युग में कोई अभागा ही होगा जो अपनी समस्याओं को सुलझाने में साबर साधनाओं का सहारा न लेता हो।

साबर साधनाओं में सफलता का मूल आधार प्रामाणिक सामग्री एवं सही मन्त्र जप है, सामग्री सिद्ध प्रामाणिक मन्त्र युक्त हो तभी उसका प्रभाव होता है।

पाठकों एवं साधकों की सुविधा के लिए हमने ऐसा ही किया है, जिससे कि सभी साधकों को एक ही स्थान पर मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त प्रामाणिक सामग्री प्राप्त हो सके, यद्यपि मन्त्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त करने मे कुछ अतिरिक्त व्यय अवश्य जाता है, परन्तु उससे उसकी विश्वसनीयता प्रामाणिकता और प्रभावोत्पादकता में कई गुना वृद्धि हो जाती है, नीचे जिस पृष्ठ पर जिस सामग्री का विवरण है, उसी को आधार बनाकर जानकारी प्रस्तुत की जा रही है।

क्र.सं.	सामग्री का नाम	पृष्ठ सं०	मूल्य
१-	काला ऊनी आसन	२२	१५०)
२-	कुंकुम (१०० ग्राम)	२२	५)
३-	हत्था जोड़ी	२२	४५०)
४-	हकीक माला	२२	१८०)
५-	काली धोती	२२	१२०)
६-	सूअर का दांत (एक नग)	२२	११०)
७-	लघु नारियल (एक नग)	२२	३०)
८-	सुपारी (सात नग)	२३	३०)
९-	मूंगे की माला	२३	१८०)
१०-	हकीक माला या हकीक पत्थर (एक नग)	२४	१२)
११-	लाल सूती आसन	२५	८०)
१२-	लाल धोती	२५	१२०)
१३-	सियार सिंगी	२५	४५०)

गुरु–स्तुति



अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में ।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में ।। अब सौंप दिया....

मेरा निश्चय है बस एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊं मैं ।
अर्पण कर दूं दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में ।। अब सौंप....

जो जग में रहूं तो ऐसे रहूं ज्यों जल में कमल का फूल रहे ।
मेरे सब गुण दोष समर्पित हों, भगवान तुम्हारे हाथों में ।। अब सौंप....

यदि मानव का मुझे जन्म मिले, तो तव चरणों का पुजारी बनूं ।
इस पूजक की इक-इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में ।। अब सौंप....

जब-जब संसार का कैदी बनूं, निष्काम भाव से कर्म करूं ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूं साकार तुम्हारे हाथों में ।। अब सौंप....

मुझमें तुझमें बस भेद यही, मैं नर हूं तुम नारायण हो ।
मैं हूं संसार के हाथों में संसार तुम्हारे हाथों में ।। अब सौंप दिया....



कायाकल्प सिद्धि मन्त्र

ॐ ह्रीं ऐं वं द्रौं श्रीं ह्लीं सर्व देह साधय शुद्धय कल्पय ह्रीं ऐं ॐ नमः ।



ऊर्ध्वगामी प्रकाश पुंज मन्त्र

ॐ ब्रं ब्रह्माण्डं गमय ऊर्ध्व देह साधय साधय ह्रीं वं फट् ।।

आप किसी व्यक्ति को पत्रिका सदस्य बना कर सदस्यता शुल्क प्राप्त कर लें और हम आपको वी.पी. से यह गुटिका भेज देंगे जिससे कि आपको सर्वथा उपहार रूप में गुटिका प्राप्त हो जायेगी और जिनको आप पत्रिका सदस्य बनायेंगे उनको हम पूरे वर्ष भर पत्रिका नियमित रूप से भेजते रहेंगे ।

देह सिद्धि गुटिका प्रपत्र

मैं पत्रिका सदस्य हूँ आप मुझे ९६)रु. पत्रिका शुल्क तथा ९) रु. वी.पी. खर्च लगाकर यह गुटिका निम्न पते पर मुझे भेज दें । वी.पी. प्राप्त होने पर मैं पोस्टमेन को धनराशि दे कर वी.पी. छुड़ा लूंगा ।

पत्रिका सदस्यता संख्या.....................

मेरा नाम..

मेरा पूरा पता..

....

वी.पी. छूटने पर आप मेरे निम्न मित्र या परिचित को पूरे वर्ष भर पत्रिका भेजते रहें-

मेरे मित्र का नाम ....

मेरे मित्र का पूरा पता ....

....

नोट:- यह सुविधा पत्रिका प्राप्ति के बाद एक महीने तक ही उपलब्ध होगी ।

इसे केवल पत्रिका सदस्य ही प्राप्त कर सकेंगे । 卐

आरती

जय सन्यासी अग्रणी जय शान्तं रूपं ॥१॥
जय जय सन्यस्त्वं मा जय भगवद्द्वीपं ॥
ॐ जय जय जय निखिलं

हिमालये निवसति मुक्त त्वं प्रकृति त्वां मध्ये ।
विचरति गिरिवर गहने गह्वर सहि मुदिता ॥२॥
ॐ जय जय जय निखिलं ।

शान्तं वेशं भव्यं अद्वितीय रूपं ।
व्याघ्रं वज्र विहन्तु वक्षस्थल त्व त्वं ॥३॥
ॐ जय जय जय निखिलं ॥

वेद पुराण शास्त्रं ज्योतिष महि तत्वं ।
मंत्र तंत्र उद्धारय साध्यं सहि सहितं ॥४॥
ॐ जय जय जय निखिलं ।

ऋपि दिव्यं देह भस्म रुद्राक्ष सहितं ।
विचरति निशिदिन प्राप्तं धन्य महि युक्तं ॥५॥
ॐ जय जय जय निखिलं

सिद्धाश्रम स प्राणं मंत्र सृष्टस्वं ।
लक्ष लक्ष निहारत अद्वय अवियुक्तं ॥६॥
ॐ जय जय जय निखिलं

भव्य विशालं नेत्रं भाल तेजस्वं ।
लक्षं शिष्यं ध्यावति निखिलेश्वर गुरुवम् ॥७॥
ॐ जय जय जय निखिलं ॥

संगीत युक्तं आरार्तिक यः पठत यदि श्रणु तं ।
गुरु मोद वर प्राप्तुं शिष्यत्व पूर्णं ॥८॥
ॐ जय जय जय निखिलं

व्यक्ति के शरीर में कुछ ऐसा आकर्षण उत्पन्न हो जाता है, कि लोग पुरुष या स्त्री उससे आकर्षित होते हैं और एक प्रकार से उन पर सम्मोहन सा छा जाता है।

रस कंकाली ग्रन्थ में इस गुटिका के बारे में कहा गया है, कि १२ घंटे तक इस गुटिका को शक्कर में रख कर गुटिका को हटा दें और वह शक्कर दूध या चाय में मिला कर जिस को भी पिलाई जाय, तो पीने वाला तुरन्त वश में हो जाता है और मन चाहा कार्य करने लग जाता है।

इसी ग्रन्थ में आगे बताया गया है कि यदि श्मशान का कोयला लाकर उसके साथ इस गुटिका को बांध दी जाय और पूरी रात यह गुटिका उस कोयले से बंधी रहे, दूसरे दिन प्रातः काल गुटिका को अपने स्थान पर रख दे और वह कोयला यदि शत्रु के घर में फेंक दिया जाय या उसके मकान पर कहीं गाड़ दिया जाय तो उसके घर में नित्य कलह होता रहता है और आर्थिक दृष्टि से धीरे-धीरे वह घर दरिद्री हो कर तबाह हो जाता है।

रस दर्पण में इस गुटिका के बारे में कहा गया है, कि यदि इस गुटिका को दुकान में किसी कपड़े में बांध कर लटका दिया जाय तो दुकान की बिक्री आश्चर्यजनक रूप से बढ़ जाती है, और इस प्रकार लगातार लक्ष्मी आती ही रहती है।

एक अन्य ग्रन्थ में इस गुटिका के बारे में बताया है, कि किसी तांबे के गिलास में इस गुटिका को रख दिया जाय, और उस गिलास में पानी भर दिया जाय सुबह उठने पर गिलास में से गुटिका को तो बाहर निकाल दिया जाय और वह पानी यदि रोगियों को पिलाया जाय तो उनके रोग समाप्त हो जाते है। यदि किसी को भूत प्रेत लगा हो, और उसे इस जल को पिलाया जाय तो शरीर स्थित भूत प्रेतों का उपद्रव समाप्त हो जाता है, यदि इस प्रकार के जल को घर में छिड़का जाय तो घर में किसी ने यदि कोई क्रिया या तांत्रिक प्रयोग सम्पन्न करवाया हो तो वह तांत्रिक प्रयोग समाप्त हो जाता है।



नागार्जुन ने स्वयं इस प्रकार की गुटिका की अत्यन्त प्रशंसा की है और कहा है कि यह तो अपने आप में एक सम्पूर्ण रत्न है, जिसे घर में रखने से ही आर्थिक उन्नति होती रहती है, जीवन में किसी प्रकार की बाधा या अड़चन नहीं आती, क्योंकि इस गुटिका के १०८ प्रयोग हैं, यदि गुटिका घर में है तो कभी भी इसका उपयोग हो सकता है।

उपहार

मेरा पिछला कई वर्षों का यह अनुभव है, कि इस प्रकार की 'दिव्य गुटिका' को प्राप्त करने के लिए बहुत अधिक दबाव पड़ता है। रस सिद्ध आचार्यों ने कहा है कि इस गुटिका की बिक्री नहीं की जानी चाहिए, नित्य गुटिका से संबंधित मंत्र जप होना चाहिए और पूर्ण श्रद्धा के साथ गुटिका का उपयोग करना चाहिए तभी इसका फल प्राप्त हो पाता है, इसलिए केवल भारत में रहने वाले पत्रिका पाठकों को केवल एक पत्रिका सदस्य बनाने पर यह गुटिका उपहार स्वरूप प्रदान की जा सकती है।

नागार्जुन ने स्वयं इस प्रकार की गुटिका की अत्यन्त प्रशंसा की है और कहा है कि यह तो अपने आप में एक सम्पूर्ण रत्न है, जिसे घर में रखने से ही आर्थिक उन्नति होती रहती है, जीवन में किसी प्रकार की बाधा या अड़चन नहीं आती, क्योंकि इस गुटिका के १०८ प्रयोग है, यदि गुटिका घर में है तो कभी भी इसका उपयोग हो सकता है।

द्वारा व्यक्ति पर्वथा सुरक्षित रहता है और यदि यह मणि जेब में रहती है, तो आने वाले खतरे का पूर्वानुमान लग जाता है, इसी ग्रन्थ में यह भी बताया है, कि इस मणि को अपने सिरहाने रख कर रात्रि को सो जाय और सोने से पूर्व प्रश्न जानना चाहे, तो उस प्रश्न का उत्तर मिल जाता है. परन्तु ये क्रियाएं सम्पन्न करने से पूर्व इस मणि को अपनी दाहिनी हथेली में रख कर पूर्ण श्रद्धापूर्वक एक बार माला मंत्र जप कर देना चाहिए , जिससे कि यह मणि संबधित स.धक के लिए सिद्ध हो ज य । वह मंत्र इस प्रकार है–

ॐ ह्रीं हूं फट् चक्रेश्वरी.परत पादुका साधनं
स्वर्ण देहि वज्र दे.हे फट्

यह मंत्र जप किसी भी माला के द्वारा सम्पन्न किया जा सकता है।

जैसा कि मैंने ऊपर बताया है कि इस रस मणि से १०८ प्रकार के लाभ उठाये जा सकते है। जिनमें से कुछ उदाहरण इस प्रकार है–

१- इसके पास में रहने से व्यक्ति सुरक्षित रहता है और आने वाले खतरे का आभास पहले से ही हो जाता है। २– इस गुटिका को मंत्र सिद्ध कर यदि कोई प्रश्न या लाटरी का नम्बर अथवा कोई अन्य जानकारी साधक चाहे तो मंत्र का ११ बार उच्चारण कर इस सिद्ध गुटिका को सिरहाने रख कर सो जाय तो रात्रि में उसे उस प्रश्न का उत्तर मिल जाता है। ३- नागार्जुन के अनुसार यदि इस पारद गुटिका का कुछ भाग चील के अण्डों में रख दिया जाय और बाद में जब अण्डे फूटे तो उसमें से वह पारद निकाल लिया जाय, ऐसे पारद को मुंह में रखते ही आकाश गामिनी सिद्धि प्राप्त हो जाती है। ४- नाथपंथियों के अनुसार किसी भी अमावस्या की रात्रि को या ग्रहण काल में इस गुटिका को दाहिने हाथ में रख कर एक माला मंत्र जाप किया जाय तो निश्चय ही साधक का मन चाहा कार्य सम्पन्न हो जाता है। ५- महारसायन तंत्र में बताया गया है कि यदि इस गुटिका को गजपुट अग्नि दे कर सिद्ध किया जाय और फिर इस गुटिका को पैरों के नीचे तलहटी पर रगडा जाय तो वह व्यक्ति जलगमन प्रक्रिया सिद्ध कर लेता है और वह पानी पर उसी प्रकार चल सकता है, जिस प्रकार आम आदमी जमीन पर चलता है। ६- इस गुटिका को पलास के कोयलों में रख कर जारण किया जाय तो इस गुटिका से जो श्वेत भस्म प्राप्त होगी, उस श्वेत भस्म को तांबे पर रखने से वह तांबा तुरन्त सोने में परिवर्तित हो जाता है। ७- मरल मातंगी ग्रन्थ के अनुसार यदि इसी गुटिका को ठंडे थूहर के दूध में घोट कर तैयार किया जाय और उस गुटिका को मुंह में रख दे तो व्यक्ति अदृश्य हो जाता है।

यों तो इस गुटिका के बारे में समस्त ग्रन्थों में बहुत कुछ लिखा गया है, जो कि इस छोटे से लेख में देना संभव नहीं है, परन्तु इसमें कोई दो राय नहीं, कि इसको शास्त्रों में "दिव्य गुटी" कहा है, यह गुटिका अगर अपने पास रखी जाय तो वह किसी पर भी वशीकरण क्रिया सम्पन्न कर सकता है, यदि यह गुटिका अपने जेब में रख कर किसी अधिकारी से मिले तो वह अधिकारी उसकी बात मान लेता है।

सम्मोहन और वशीकरण क्रिया में तो यह गुटिका अपने आप में अद्वितीय है। इस गुटिका के प्रभाव से

१५– रस विश्व दर्पण, १६- शिवागम १७- अगस्त्य संहिता, १८- रस रत्नाकर (नागार्जुन) १९- रसेन्द्र भैरव २०- रस सर्वेश्वर २१- धातु कल्प (रूद्रयामल) २२– रसोपनिषद् २३- रस संजीवनी २४- भैरव सिद्धि कल्प ।

इस के अलावा भी रस या पारद से संबंधित ग्रन्थ उपलब्ध है. आवश्यकता, जिज्ञासा और जीवट की है, और आवश्यकता इस बात की है कि इस मार्ग में आगे बढ़ने वाले व्यक्ति के हृदय में इस क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त करने की भावना हो ।

ऊपर मैंने देह सिद्धि के बारे में संक्षिप्त वर्णन किया था, देह सिद्धि आज के युग में भी संभव है और नागार्जुन ने इसके बारे में स्पष्ट कहा है-

ससकः सर्वमोहघ्नः कफपित्तविनाशनः ।
नेत्ररोगक्षयघ्नश्च लोहपारदरञ्जनः ।।
नागार्जुनेन संदिष्टौरसश्च रसकावुभौ ।
श्रेष्ठो सिद्धरसौ स्यातौ देहलौहकरौ परम् ।।

अर्थात् पारे को अभ्रक चूर्ण में पका कर अम्ल में सूरण रस भावना दी जाय और फिर इसे खरल कर कोष्ठी यंत्र में अग्नि ताप दिया जाय, लगभग तीन घण्टे तक ऐसा करने पर पारद सूर्य के समान दिव्य और तेजस्वी हो जाता है. ऐसे पारद का नित्य चौथाई रत्ती सेवन किया जाय तो एक महीने में ही पूर्ण रूप से देह सिद्धि हो जाती हैं और उसका शरीर लोहें की तरह मजबूत सोने की तरह तेजस्वी और अपने आप में दिव्य आभायुक्त बन जाता है ।

उपरोक्त विधि अत्यन्त सरल है. और मेरी राय में यदि इस क्षेत्र में किसी को थोड़ा सा भी ज्ञान है, तो वह इसमें सफलता पा सकता है ।

आज मैं इस महत्वपूर्ण दिवस पर 'रस मणि' के बारे में जानकारी प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो कि अपने आप में सर्वथा गोपनीय और महत्वपूर्ण रही है । नागार्जुन ने



इसको 'आकाश गामिनी गुटिका' कहा है. और इसके माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया सम्पन्न की है , यद्यपि यह आकाश गामनी क्रिया भी इस रस–मणि के माध्यम से ही सम्पन्न होती है ।

रस मणि

अंग्रेजी में इसको हाइड्रोलिक कहते है, अर्थात् 'पानी की मणि बनाना' यह रसायन विज्ञान के माध्यम से संभव है। यदि पारे को संस्कार से सिद्ध बना कर पक्व बीज में जारण किया जाय तो रस मणि तैयार हो जाती है । यह रस मणि अपने आप में अत्यन्त दिव्य और तेजस्वी होती है । इस मणि के माध्यम से १०८ प्रयोग सम्पन्न किये जाते है । देव रत्न में बताया गया है, कि इस मणि के



हमेशा हमेशा के लिए अपने वश में कर सकते है। पुत्री या पुत्र पर सम्मोहन क्रिया सम्पन्न कर उसके विचारों को अपने अनुकूल बना सकते है। पुत्र को व्यापार मार्ग पर लगा सकते है, या उसकी गलत प्रवृत्तियों पर अंकुश लगा सकते है। पत्नी के झगड़ालू स्वभाव को नियंत्रित कर उसे अपने अनुकूल बना सकते है। अपने अधिकारी को सम्मोहन भावना देकर इस योग्य बना सकते है कि वह स्वयं हमसे बात करने के लिए आतुर हो और हमारा कार्य करने में उसे प्रसन्नता अनुभव हो, यही नहीं अपितु इस सम्मोहन शक्ति के माध्यम से हम अच्छे वक्ता बन सकते है, समाज के लोगों पर अपना प्रभाव स्थापित कर सकते है, पार्टनर को अपने अनुकूल बना सकते है, और एक प्रकार से देखा जाय तो हम सभी परिचित लोगों के दिलों पर शासन कर सकते है।

और ऐसा होने पर हमारे जीवन का तनाव अपने आप समाप्त हो जायेगा, हमारे जीवन की बाधाएं और अड़चनें अपने आप दूर हो जायेगी, हम पहले की अपेक्षा

ज्यादा सुखी, ज्यादा सफल, और ज्यादा सम्पन्न हो सकेंगे।

कैसे खोलें द्वार सम्मोहन का

पिछले कुछ समय से सम्पूर्ण विश्व के वैज्ञानिक अपने शरीर स्थित सम्मोहन शक्ति को बढ़ावा देने के लिए प्रयत्नशील है। उन्होंने प्रयोगों के माध्यम से यह अनुभव किया है, कि यदि हम किसी भी युक्ति से अपने मन पर नियंत्रण स्थापित कर सके, और अपने शरीर स्थित सम्मोहन नामक इन्द्रिय को चेतना युक्त बना सके, तो हम स्वतः इस क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए कोई लम्बा चौड़ा परिश्रम करने की जरूरत नहीं है, हमारे शरीर मे सैकड़ों इन्द्रियां है कोई इन्द्रिय चेतना युक्त होने पर हम मुस्कराते है, दूसरे प्रकार की इन्द्रिय हमारे रोने में सहायक होती है, तीसरे प्रकार की इन्द्रिय विचारों पर नियंत्रण प्राप्त करती है, ठीक इसी प्रकार से पूरे शरीर को और विशेष कर हमारी आंखों को पूर्ण सम्मोहन शक्ति युक्त बनाने में सुषुम्ना नामक इन्द्रिय पूर्ण रूप से सहायक होती है, अधिकतर यह सुप्तावस्था में ही होती है, परन्तु यदि इसे जाग्रत और चैतन्य कर दिया जाय तो स्वतः ही सारा शरीर चेतना युक्त आकर्षण युक्त और सम्मोहन युक्त बन जाता है, ऐसे शरीर के लिए यह जरूरी नहीं है कि आप लम्बे चौडे डील डौल के हों, या आप मोटे ताजे हो, आवश्यकता इस बात की है, कि आपके शरीर के रोम रोम से सम्मोहन जाग्रत अवस्था में हो, आपकी आंखों में कुछ ऐसा, तेज, कुछ ऐसा आकर्षण और कुछ ऐसा प्रभाव हो, जो दूसरों को बरबस आपकी और आकृष्ट कर सके, आपके पास आने के लिए प्रेरित कर सके, और आपसे बातचीत करने में आपकी आज्ञा मानने में आपके अनुरूप बनने में वह अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर सके, और ऐसा हो सकता है, निश्चय ही ऐसा हो सकता है। पश्चिम के वैज्ञानिकों ने प्रयोगो द्वारा यह सिद्ध किया है, कि ऐसी शक्ति प्रत्येक स्त्री पुरुष में है, आवश्यकता उस शक्ति का उपयोग करने मे है।

और सुषुम्ना जाग्रत होते ही आपकी आंखों में सम्मोहन प्रभाव इतना तीव्र हो जाता है कि आप किसी को भी मात्र देखने से ही उसे अपने वश में कर सकते है और जीवन भर उसे अपने अनुकूल बनाये रख सकते है।

और सुषुम्ना को जाग्रत यों की जाती है

पश्चिम के वैज्ञानिक भी इस निर्णय पर पहुँचे है, कि सम्मोहन और आकर्षण प्रभाव उत्पन्न करने के लिए सुषुम्ना ग्रन्थि का जाग्रत होना आवश्यक है, और इसके लिए उन्होंने भी इस बात को स्वीकार किया है कि भारतीय पद्धति ज्यादा वैज्ञानिक, ज्यादा स्पष्ट और ज्यादा प्रामाणिक है। हरवर्ट विश्वविद्यालय में डा. कीथ ने बिजली के झटकों के द्वारा शरीर स्थित सुषुम्ना नाड़ी पर बिजली के झटके दिये गये, उन स्त्री पुरुषों के शरीर के आकर्षण में लगभग ३० प्रतिशत वृद्धि हुई, उनकी बातचीत में, उनकी आंखों में कुछ ऐसा सम्मोहन पैदा हुआ कि पहले की अपेक्षा ज्यादा लोग उन्हें चाहने लगे और वे अपने कार्य में तथा अपने व्यापार में ज्यादा सफल हुए।

पर इस युक्ति की न्यूनता यह है, कि महीने में या दो महीने में एक बार अवश्य ही सुषुम्ना नाड़ी पर बिजली के झटके लेने पड़ते है, जो कि ज्यादा उचित नहीं है, इससे धीरे धीरे सुषुम्ना नाड़ी स्वयं कमजोर होने लगती है और उसके कई गलत प्रभाव भी पैदा होने लगते है।

तिब्बत में विशेष सुइयों के माध्यम से भी सुषुम्ना नाड़ी को छेदा जाता है और उसको निरन्तर सक्रिय बनाये रखने के लिए एक पतला सा तार सुषुम्ना नाड़ी

पर पिरो दिया जाता है, परन्तु तिब्बत के योगियों ने ही अपनी इस पद्धति की अपेक्षा भारतीय पद्धति या भारतीय साधना को ज्यादा महत्व दिया है।

क्या है भारतीय साधना

एक स्थान पर एक हजार पत्थर पड़े हुए हैं, या तो आप स्वयं एक एक पत्थर उठा कर दूसरे स्थान पर रख दें या किसी अनुभवी मजदूर को कुछ पैसे दे कर यह कार्य सम्पन्न करवा ले, आपका उद्देश्य तो वहां से पत्थर हटा कर दूसरे स्थान पर रखना था, पर इसके लिए दोनों तरीके हैं, पहले तरीके की अपेक्षा दूसरा तरीका ज्यादा अनुकूल है, क्योंकि एक तो इससे आपके समय की बचत होती है और दूसरा वह मजदूर अनुभवी होने के कारण अपने हाथ पैरों को बचा कर वह कार्य जल्दी सम्पन्न कर लेगा।

ठीक इसी प्रकार "सम्मोहन यंत्र" का है, या तो आप स्वयं पूर्ण सवा लाख मंत्र जप सम्पन्न कर उस यंत्र को ऊर्जा युक्त और चैतन्य बनावे, या कुशल पंडित कुछ पैसे लेकर इस प्रकार के यंत्र को मंत्र सिद्ध चैतन्य प्राण युक्त बना दे। इस प्रकार का महत्वपूर्ण और प्रभावयुक्त सम्मोहन यंत्र बनाने पर व्यय मात्र १९५)रू. व्यय आता है। जो कि उसकी दक्षिणा और पूजन सामग्री से संबंधित होती है।

ठीक जिस प्रकार से कोट पहिन लेने से सीने पर निरन्तर गर्मी का अहसास होता रहता है, उसी प्रकार यह महत्वपूर्ण यंत्र किसी धागे में पिरो कर गले में धारण करने से या बांह पर बांधने से पूरे शरीर में निरन्तर विद्युत प्रवाह होता रहता है जो कि सुषुम्ना जाग्रत से संबंधित होता है। जिस प्रकार सिर दर्द की टिकिया मुंह के द्वारा पेट में लेने से उसका स्वतः अपने आप प्रभाव मस्तिष्क पर हो जाता है और मस्तिष्क अर्थात् सिर दर्द समाप्त हो जाता है, उसी प्रकार यह यंत्र बांह पर या गले में लटकते रहने से उसकी तेजस्वी किरणे और उसका मंत्र विद्युत प्रवाह सीधा सुषुम्ना नाड़ी पर होता रहता है और कुछ ही दिनों में सुषुम्ना नाड़ी जाग्रत हो जाती है।

और जब सुषुम्ना जाग्रत होती है, तो निश्चय ही उसका सारा शरीर आकर्षक, प्रभाव युक्त और चुम्बकीय हो जाता है। उसकी आंखों में एक विशेष प्रकार की सम्मोहन शक्ति आ जाती है, जिसके फलस्वरूप वह किसी को भी वश में कर सकता है, उसको सम्मोहित कर सकता है, और अपने जीवन में पूर्ण सफलता पा सकता है।

इस प्रक्रिया को और तीव्र करने के लिए यदि निम्न शब्दों का नित्य आधे घण्टे तक उच्चारण करें या दूसरे शब्दों में मन्त्र जप करे तो यह प्रक्रिया कुछ ही दिनों में सम्पन्न हो जाती है, और यह सम्मोहन प्रवाह जीवन भर बना रहता है।

इसके लिए यह जरूरी नहीं है कि आप स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहिन के धोती धारण करके एक स्थान पर बैठ कर ही मन्त्र जप करे, और न इसमें घी का दीपक अगरबत्ती या पूजन सामग्री की जरूरत होती है, यह मन्त्र जप तो स्नान करते हुए या स्नान करने के बाद कपड़े पहिनते हुए, या जब भी घण्टे आधे घण्टे का समय मिल जाय इस मन्त्र का उच्चारण कर सकते हैं, इन शब्दों का भी सीधा प्रवाह सुषुम्ना नाड़ी पर पड़ता है, और वह जल्दी उत्तेजित और जाग्रत हो जाती है।

Anil Kumar

मंत्र

।। ॐ क्लीं क्लीं क्रीं क्रीं हुं हुं फट् ।।

और सुषुम्ना जाग्रत होते ही आपकी आंखों में सम्मोहन प्रभाव इतना तीव्र हो जाता है कि आप किसी को भी मात्र देखने से ही उसे अपने वश में कर सकते हैं और जीवन भर उसे अपने अनुकूल बनाये रख सकते हैं।



प्रयत्न होता है कि साधकों को प्रामाणिक सामग्री एक स्थान पर मिल सके और वे साधना सम्पन्न कर इसका लाभ उठा सके।

शशिदेव्य साधना प्रयोग

यह साधना मात्र आठ दिनों की साधना है, किसी भ शुक्रवार से यह साधना प्रारम्भ की जाती है. और अग शुक्रवार को यह साधना सम्पन्न हो जाती है। इसमें स

आवश्यक नहीं है कि एक ही स्थान पर बैठ कर साधना सम्पन्न की जाय, यदि आपको इस अवधि में किसी अन्य स्थान पर जाना पड़े तो वहां पर बैठ कर के भी रात्रि में इस साधना को सम्पन्न किया जा सकता है, यह रात्रि कालीन साधना है, और इसको रात में ही सम्पन्न करना चाहिए।

इस साधना में किसी विशेष प्रकार के वस्त्र या आसन आदि की आवश्यकता नहीं है, साधक चाहे तो धोती या अन्य किसी भी प्रकार के वस्त्र धारण कर इस साधना को सम्पन्न कर सकता है। साधना काल में अपने कानों में गुलाब का इत्र लगा कर साधना में बैठे तो ज्यादा उचित रहता है।

सामने किसी पात्र में गुलाब की पंखुड़ियां बिछाकर (गुलाब न हो तो अन्य किसी भी प्रकार के पुष्प का उपयोग हो सकता है) उस पर शशिदेव्य अप्सरा यंत्र को स्थापित कर दे। यह यंत्र अत्यन्त ही महत्वपूर्ण माना गया है, और इसे मंत्र सिद्ध तथा तेजस्वी सम्पन्न करने पर व्यय मात्र २४०) रू. आया है। इस यंत्र को गुलाब की पंखुड़ियों पर स्थापित कर उस पर केसर का तिलक करे और फिर अपने दाहिने हाथ पर बांये हाथ से केसर से 'शशिदेव्य अप्सरायै नमः' अक्षर लिखे और फिर दाहिने हाथ से ही हकीक माला के द्वारा मंत्र जप करे। इसमें सफेद रंग के अलावा अन्य रंग की हकीक माला का प्रयोग करना चाहिए।

सबसे पहले अपनी आंखों के सामने अत्यन्त सुन्दर आकर्षक मन मोहक अप्सरा का चिन्तन करे, और फिर निम्न प्रकार से उसका ध्यान और आह्वान करे।

त्रैलोक्य मोहिनी गौरी विचित्राम्बर-धारिणी
विचित्रालङ्कृता रम्या नर्तकी-वेष धारिणीम्।
पूर्ण चन्द्राननां गौरी विचित्राम्बर-धारिणी
पीनोन्नत-कुचा-रामां सर्वज्ञामभय-प्रदाम्।
कुरंग नेत्रां शरबिन्दु-वक्त्रां बिम्बाधरां चन्दन-
गन्ध-माल्याम्।
चीनांशुकां पान-कुचां मनोज्ञां दिव्यां सदा काम-
करां विचित्राम्।

ध्यान के बाद निम्न मंत्र की ५१ माला मंत्र जप करे

मंत्र

ॐ ह्लीं आगच्छागच्छ शशिदेव्य अप्सरायै नमः

५१ माला मन्त्र जप होने के बाद साधक विश्राम करे, इस प्रकार नित्य करे, पर अपने साधना के रहस्य किसी को न बतावे, यदि इन आठ दिनों में कुछ दृश्य दिखाई भी दे तब भी किसी को न कहे।

अगले आठवे दिन शुक्रवार की रात्रि को अत्यन्त सुन्दर आकर्षक मनमोहक शशिदेव्य अप्सरा साधक के सामने सशरीर उपस्थित होती है, और वह साधक के पास ही घुटने से घुटना सटा कर बैठ जाती है, और लज्जा के साथ कहती है कि मैं तुम्हारी साधना के द्वारा तुम्हारे वश में हूं, और जीवन पर्यन्त तुम्हारे वश में रहूंगी, जब वह हाथ पर हाथ दे कर वचन दे, तब साधक अपने आसन से उठ खड़ा हो और वह सामने पात्र रखा हुआ शशिदेव्य अप्सरा यन्त्र अपने गले में या शरीर पर धारण कर ले, इस प्रकार जब तक वह यन्त्र साधक के शरीर पर रहेगा, तब तक शशिदेव्य अप्सरा साधक के वश में बनी रहेगी।

और जब भी उस यन्त्र को स्पर्श कर पीछे दिये हुए मन्त्र का ११ बार उच्चारण किया जायेगा तब वह प्रत्यक्ष प्रगट होगी और उसे जो भी कार्य सौंपा जायेगा' वह अवश्य ही पूर्ण करेगी।

यों तो यह साधना कभी भी की जाती है, पर ७ जून ८९ को शशिदेव्य अप्सरा दिवस है, और इस दिन पुष्य नक्षत्र भी है, अतः इस दिन साधना प्रारम्भ की जाय तो निश्चय ही सफलता मिल सकती है, वास्तव में ही प्रत्येक साधक को इस दिन का उपयोग करना चाहिए।